राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 37 ▪ अंक 7 ▪ जनवरी, 2017 ▪ ₹10 ▪ पृष्ठ 36

62वाँ ABVP
राष्ट्रीय अधिवेशन
24 से 27 दिसम्बर 2016 इन्दौर

इन्दौर में उमड़ा लघु भारत

अभाविप के 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करते रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर, साथ में हैं पद्म विभूषण सोनल मानसिंह एवं अभाविप के पदाधिकारीगण

"राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण ही है सच्चा राष्ट्रवाद" : विनय बिदरे 8

अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) यात्रा 10

सार्वकालिक है छात्र आन्दोलन की प्रासंगिकता 24

62वें राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियाँ

उद्घाटन समारोह में संबोधित करते रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर

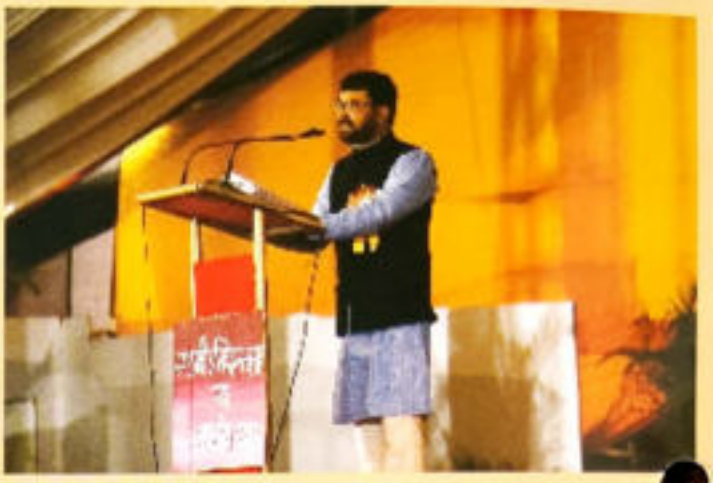

महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत करते अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री विनय बि

आर. के. विश्वजीत सिंह को युवा पुरस्कार का स्मृति चिह्न व चेक प्रदान करते हुए रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर, पद्म विभूषण सोनल मानसिंह, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर, महामंत्री विनय बिदरे व अन्य

'दुबाईस मैन मेकिंग' पुस्तक का विमोचन करते रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर, पद्म विभूषण सोनल मानसिंह, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर, महामंत्री विनय बिदरे

उद्घाटन-समारोह को संबोधित करती पद्म विभूषण सोनल मानसिंह

पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन में मंचासीन, दायें से अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर व अन्य

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

...क्षा-क्षेत्र की प्रतिनिधि-पत्रिका

वर्ष 37, अंक 7
जनवरी, 2017

संपादक-मण्डल :
आशुतोष
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
छात्रशक्ति भवन
26...नदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
वेबसाइट : www.abvp.org

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/chhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली-110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रित।

इस अंक में...

4 संपादकीय

6 "परिवर्तन का केन्द्र-बिन्दु है अभाविप" : पर्रिकर

8 "राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण ही है सच्चा राष्ट्रवाद" : विनय बिदरे

10 अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) यात्रा

14 "आज का युवा निष्क्रिय नहीं, सक्रिय है" : आम्बेकर

15 अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव क्रमांक 1 : शैक्षणिक परिदृश्य

16 ड्रग्स के खिलाफ जारी रहेगी हमारी लड़ाई : आर. के. विश्वजीत सिंह

17 कर्नाटक के दिव्यांग छात्र सी. मंजुनाथ ने अभाविप पर की पीएच. डी.

18 परिचर्चा : नोटबंदी... राष्ट्रहित में लिया गया फ़ैसला या जनता के साथ धोखा...??

20 "अभाविप का इतिहास गौरवशाली" : विनय बिदरे

21 अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव प्रस्ताव-क्रमांक 2 : राष्ट्रीय परिदृश्य

23 "समरसता से ही सुरक्षित होगा भारत" : श्रीनिवास

24 सार्वकालिक है छात्र आन्दोलन की प्रासंगिकता : रजनीश शुक्ल

27 नेपाल का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और भारत

28 प्रस्ताव-क्रमांक 3 : "सामाजिक भेदभाव व ग़रीबी से मुक्त भारत के लिए संकल्पित हों युवा"

29 "श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण-केन्द्र है अभाविप" : शिवराज सिंह चौहान

30 अभाविप : राष्ट्रीय पदाधिकारी : 2016-17

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में अभाविप का 62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। देशभर से आए आठ हज़ार से अधिक प्रतिनिधियों का समूह एक लघु भारत का दृश्य उत्पन्न कर रहा था। इस अवसर पर आयोजित मध्यप्रदेश के पूर्व कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के चलते कार्यकर्ताओं की अनेक पीढ़ियाँ एकत्र हुईं।

परिषद्-कार्यकर्ताओं की दशकों की साधना का ही परिणाम है कि वर्तमान उपभोक्तावादी काल में भी परिसरों में एक जीवंत और स्पन्दनयुक्त वातावरण बना हुआ है। इन्हीं परिसरों में काम करते हुए विद्यार्थियों के मन में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति विश्वास पनपा और राष्ट्रभक्ति और त्यागपूर्ण जीवन का संकल्प लेकर उद्देश्यपूर्ण जीवन जीनेवाले कार्यकर्ताओं की मालिका तैयार हुई है।

छब्बीस जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाते हुए यह उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि यदि परिसरों में ही लोकतंत्र के प्रति आस्था न रही होती तो आपातकाल का अंधेरा छंटना प्रायः असंभव था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण और जॉर्ज फर्नांडीज-जैसे तत्कालीन नेताओं की स्वीकारोक्ति कि अपनी गिरफ़्तारी के बाद वे सोच भी नहीं पाते थे कि बिना नेतृत्व के भी संघर्ष जारी रहेगा, इसकी पुष्टि करता है।

भारत में गणतांत्रिक व्यवस्था का इतिहास पुराना है। लिच्छिवियों का गणतंत्र और उससे पूर्व महाभारत-काल में यादवों के गणतंत्र के विषय में हमने सुना है। वस्तुतः भारतीय विचारकों ने लोकरञ्जन को ही राजा का कर्तव्य निरूपित किया है। राजा को प्रजा के कल्याण से परे निजी सुखों की कल्पना का भी आचार्य चाणक्य निषेध करते हैं।

गणतंत्र की इतनी उज्ज्वल परम्परा के वाहक होते हुए भी आज भारतीय गणतंत्र के सम्मुख अनेक चुनौतियाँ खड़ी हुई हैं। गणतंत्र दिवस के निमित्त इन्हें भी स्मरण करना प्रासंगिक होगा। पहली चुनौती तो स्वयं उस समूह से है जो इस व्यवस्था के संरक्षण के लिए चुने गए हैं। संसद में लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण, यहां तक कि सत्ता पर नैतिक नियंत्रण की ज़िम्मेदारी भी विपक्ष की होती है किन्तु वर्तमान विपक्ष मर्यादाओं का निर्लज्ज उपहास करते हुए कोई-न-कोई कारण लेकर सदन की कार्यवाही को निरंतर बाधित करता है।

दूसरी ओर देश के ही सीमावर्ती कुछ भागों में भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों से ही नागरिकों को वंचित किया जा रहा है। हाल में ही कश्मीर में एक किशोरी को उसकी

उपलब्धियों के लिये माफ़ी मांगनी पड़ी, वहीं भारत को खण्डित करने के मंसूबे जतानेवालों को महिमामण्डित किया जा रहा है। केरल में राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं की हत्याएँ हो रही हैं और अपराधियों को सत्ता का संरक्षण प्राप्त है। इन परिस्थितियों में देश को, विशेषकर उसके छात्र और युवाओं को गणतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण का रचनात्मक अभियान छेड़ना होगा। परिसरों की जीवंतता को और अधिक सशक्त बनाकर ही यह संभव है।

गत वर्ष हमने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और उस्मानिया विश्वविद्यालय-सरीखे संस्थानों में मानवाधिकारों के नाम पर एक नयी तरह की अराजकता को पनपते देखा है। आम विद्यार्थी के समक्ष इसके पीछे की कुटिल चालों को उजागर करने की ज़िम्मेदारी तो है ही, साथ ही उन तक यह संदेश भी पहुंचाना ज़रूरी है कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और बाबा साहिब डॉ. भीमराव आम्बेडकर-जैसे संविधान-निर्माताओं की दृष्टि में भारत का क्या प्रारूप था।

अभाविप का 62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक संकल्पों के साथ संपन्न हुआ जिनके विषय में विस्तार से जानकारी अंदर के पृष्ठों पर संग्रहीत है। समस्त पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभेच्छा सहित,

आपका,

संपादक

आवरण-कथा

62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

24 से 27 दिसम्बर 2016 इन्दौर

"परिवर्तन का केन्द्र-बिन्दु है अभाविप" : परिकर

अभाविप के 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन के शुभारम्भ पर रक्षा मंत्री मनोहर परिकर ने किया युवाओं को संबोधित

समाज में जितने भी परिवर्तन हुए हैं, उसमें युवाओं का विशिष्ट योगदान रहा है। किसी भी राष्ट्र या समाज की संकल्पना युवा-शक्ति के बिना नहीं की जा सकती है। जब-जब देश के खिलाफ विश्वविद्यालय में स्वर गूंजा, तब-तब अभाविप ने उसका कड़ा प्रतिकार किया, जिसके लिए अभाविप-कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। अभाविप न केवल शैक्षणिक परिसर में व्याप्त समस्याओं को उठाता है, बल्कि समाज में व्याप्त बुराइयों को भी दूर करने में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में जितनी भी सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, नीतिगत बदलाव की क्रांति हुई है, उसमें अभाविप की भूमिका सबसे अधिक है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए अभाविप-कार्यकर्ता हमेशा डटे रहते हैं। हम कह सकते हैं कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए केन्द्र-बिंदु का काम कर रही है अभाविप, ये बातें देश के रक्षा मंत्री मनोहर परिकर ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 62वें अधिवेशन के उद्घाटन-समारोह में कहीं।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री परिकर ने कहा कि अभाविप ने कभी भी केवल डिग्री हासिल करने को बढ़ावा नहीं दिया है। डिग्री तो प्रिंटिंग प्रेस में भी निकाली जाती है। इस संगठन ने हमेशा ज्ञानप्राप्ति को प्रोत्साहित किया है। शिक्षा प्राप्त करने से हम साक्षर हो जाते हैं। हमें पढ़ना-लिखना आता है, लेकिन ऐसे भी कई लोग हैं जो डिग्री न होने के बाद भी ज्ञानवान् हैं। ईमानदारी हमारे लिए नीति नहीं अपितु सिद्धान्त होना चाहिए। नीति समय-समय पर बदलती रहती है, लेकिन सिद्धान्त कभी नहीं बदलता। ईमानदारी हमारा तत्त्व है, सिद्धान्त है।

शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा क्षेत्र को महत्त्व दिया जाना चाहिए। इसके लिए उन्होंने कोंकण में पैदा होनेवाले तरबूज की खेती का उदाहरण दिया और कहा कि एक समय के बाद बीजों के समाप्त होने से तरबूज की खेती बंद हो गई, क्योंकि इनके बीजों को संरक्षित करने की प्रक्रिया समाप्त हो गई थी। उन्होंने कहा कि इसी तरह से शिक्षा-प्रणाली में खराबी होने के कारण चार-पाँच पीढ़ी के बाद पूरी व्यवस्था खराब हो जाती है। शिक्षा का क्षेत्र सबसे संरक्षित होना चाहिए। यदि शिक्षा-पद्धति में सुधार नहीं किया गया तो आने-वाले 50-60 साल में भारतीय संस्कृति मिट जायेगी।

शिक्षा ऐसी हो जो चरित्र का निर्माण करे : डॉ. नागेश ठाकुर

शिक्षा समाज को जगाने का काम करती है। शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का उत्थान संभव नही है। शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों में चरित्र का निर्माण करे। वर्तमान शिक्षा नीति में कई खामियां हैं, नई शिक्षा नीति में हो रही देरी चिंता का विषय है। शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए जो हमारी संस्कृति का वाहक बने और युवाओं में राष्ट्र प्रेम की भावना को विकसित करे। अब समय आ गया है कि शिक्षा क्षेत्र में एक सर्जिकल

स्ट्राइक होनी चाहिए। ये बातें अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर ने कहीं।

डॉ. ठाकुर ने कहा कि शिक्षा नीति में बदलाव की मांग अभाविप लंबे समय से कर रही है। विद्यार्थी परिषद् का मानना है कि शिक्षा नीति में बदलाव के बिना, हम सशक्त, सुसंस्कृत राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुरूप राष्ट्रभक्त युवाओं का निर्माण करने और उन्हें राष्ट्र हित के कार्यों में संलग्न करने की प्रेरणा देने का कार्य विद्यार्थी परिषद् करती है। अभाविप दुनिया का सबसे बड़ा छात्र संगठन है जिसकी सदस्य संख्या बत्तीस लाख से अधिक है।

अभाविप का मानना है कि युवा शक्ति राष्ट्रशक्ति है। उन्होंने कहा कि दुनिया में जितने भी परिवर्तन आए हैं, उनमें युवाओं की भूमिका अग्रणी रही है। दुनिया में छात्र आंदोलन सिर्फ अपने अधिकारों के लिए होते रहे हैं। लेकिन, अभाविप ने छात्र आंदोलनों को नई दिशा दी है। हमारा मानना है कि अधिकारों के अलावा समाज के प्रति भी हमारे दायित्व हैं। हमें उनके लिए भी आगे आना होगा। उन्होंने बताया कि परिषद् समस्याओं के लिए नहीं, समाधान के लिए काम करती है। छात्र आंदोलन ट्रेड यूनियन गतिविधि नहीं है, बल्कि यह एक मिशन है।

कोई भी सभ्यता, संस्कृति के बिना आत्महीन हो जाती है : सोनल मानसिंह

कला देश को एक सूत्र में जोड़ने का काम करती है। कला के बिना किसी भी देश की संस्कृति आत्महीन हो जाती है। कला में ऐसी शक्ति है जो किसी के हृदय को परिवर्तित कर सकती है। हमारा देश दुनिया का सबसे प्राचीन देश है। उसको आत्महीन होने से बचाने के लिए हमें अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाना होगा। उक्त बातें अभाविप के उद्घाटन समारोह में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पद्म विभूषण सोनल मानसिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि आज भी मैं एक छात्र ही हूँ, क्योंकि आज भी कुछ-न-कुछ सीख रही हूँ। जीवन में कुछ पाने के लिए हमें अपने अंदर भूख को जगाना होगा, तभी हम अपने लक्ष्य को हासिल कर पायेंगे।

भारतीय संस्कृति के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति सबसे निराली है। विश्व में एकमात्र ऐसी संस्कृति है जो समस्त संसार को अपना परिवार मानती है। कुछ लोग सवाल करते हैं कि आप कौन होते हैं हमें यह कहनेवाले। हमें इस प्रकार के सवाल का उत्तर देना चाहिए कि हम ही हैं आपको उत्तर देनेवाले। उन्होंने कहा कि अपने अस्तित्व के लिए हमें लड़ना होगा।

तथाकथित सेक्युलर ताकतों की सच्चाई को उजागर करते हुए सोनल मानसिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द के शिकागो-

व्याख्यान के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अमेरिका में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। तब अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि उस सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए भारत से कलाकारों के दल को जाना चाहिए। उस सांस्कृतिक कार्यक्रम में मेरा, अनुराधा पौडवाल, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, अनूप जलोटा का जाना तय हुआ। लेकिन तत्कालीन शिक्षा मंत्री और सेक्युलर नेता अर्जुन सिंह ने हमलोगों के अमेरिका जाने में अड़ंगा लगाना शुरू कर दिया। उनके निर्देश पर बाकी तीन को वीजा जारी नहीं किया गया। चूंकि मेरे पास वीजा था, इसलिए मैं उस कार्यक्रम में शामिल हुई। इस कार्यक्रम में शामिल होने के कारण जेएनयू, सहमत संस्था और अन्य वामपंथी संस्थाओं एवं बुद्धिजीवियों ने मेरे खिलाफ घृणित वातावरण बनाने का प्रयास किया। ■

साक्षात्कार

"राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण ही है सच्चा राष्ट्रवाद" : विनय बिदरे

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए प्रांत मंत्री, राष्ट्रीय मंत्री और अब राष्ट्रीय महामंत्री के लिए पुनर्निर्वाचित श्री विनय बिदरे मूलतः कर्नाटक प्रांत के तुमकुर ज़िले के बिदरे गाँव के हैं। वर्ष 1998 से वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संपर्क में आये। अपने शैक्षणिक जीवन में इन्होंने कई आंदोलनों का सफल नेतृत्व भी किया। इसके अलावा विनय बिदरे 2014 में भारत सरकार के युवा व खेल मंत्रालय द्वारा चीन भेजे गये प्रतिनिधिमंडल के सदस्य भी रहे। वर्तमान में कर्नाटक, तेलगांना और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रीय सह-संगठन मंत्री के रूप में काम कर रहे हैं। विद्यार्थी परिषद् के 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पुनर्निर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे से राष्ट्रीय छात्रशक्ति संवाददाता अजीत कुमार सिंह ने बात की। प्रस्तुत है बातचीत के अंश...

▪ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री पुनर्निर्वाचित होने पर आप कार्यकर्ताओं को क्या सन्देश देना चाहेंगे ?

विद्यार्थी परिषद् ने मुझ जैसे समान्य कार्यकर्ता पर पुनः विश्वास कर महामंत्री का दायित्व सौंपा है, इसके लिए मैं परिषद् का आभारी हूँ। विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन का महामंत्री के रूप में दायित्व निभाना गौरव की बात है। हालांकि अभाविप के द्वारा कार्यकर्ताओं में विश्वास जगाने के लिए समय-समय पर नये दायित्व दिए जाते हैं ताकि कार्यकर्ता का पूर्ण विकास हो। आनेवाले समय में विद्यार्थी परिषद् के द्वारा बहुत से कार्य किये जाने हैं, बत्तीस लाख सदस्यों के साथ-साथ समाज के समस्त युवा-वर्ग में अभाविप के विचारों को स्थापित करना है।

▪ देशभर में हुए छात्र संघ चुनाव में लगभग सभी महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में विद्यार्थी परिषद् की जीत हुई है, खासकर केरल, पूर्वोत्तर और जनजाति बहुल झारखण्ड में। इस पूरे परिदृश्य के बारे में आपकी क्या राय है ?

यह जीत विद्यार्थी परिषद् के प्रति छात्रों के समर्थन को दर्शाती है, अभाविप शुरू से ही परिसर में छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष करती रही है, उसी का परिणाम है कि आज पूरे देश में

विद्यार्थी परिषद् की जीत हुई है। केरल में वामपंथ की सरकार है, इसके बावजूद वहाँ पर विद्यार्थी परिषद् की जीत हुई है। चाहे वह आईआईटी का कॉलेज हो, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय हो या कालीकट विश्वविद्यालय, हर जगह अभाविप ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई है। झारखण्ड के इतिहास में पहली बार वहाँ के तीन विश्वविद्यालयों में जनजाति छात्र, छात्र संघ अध्यक्ष बने हैं, इससे ज्यादा गौरव की बात क्या हो सकती है। अगर पूर्वोत्तर की बात करें तो असम, त्रिपुरा, मणिपुर सहित अन्य सभी जगहों पर जहाँ-जहाँ छात्र संघ चुनाव हुआ है, हर जगह पर विद्यार्थी परिषद् की जीत हुई है। यह जीत छात्रों के प्रति विद्यार्थी परिषद् के समर्पण को दर्शाती है।

▪ पिछले वर्ष अभाविप के द्वारा देशभर में सामाजिक अनुभूति कार्यक्रम चलाया गया, इस कार्यक्रम पीछे परिषद् का क्या उद्देश्य है ?

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर की

125वीं जयन्ती पर देशभर में सामाजिक अनुभूति कार्यक्रम चलाया गया, ताकि परिषद् के कार्यकर्ता अपने देश के वास्तविक हालात को जान सकें, उन्हें पता चले कि आज भी देश के लोगों के बीच कितनी समस्याएँ मौजूद है और वे कैसे अपना गुजर-बसर करते हैं। इस तरह के अनोखे कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं में राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भावना का विकास करना अभाविप का मूल उद्देश्य है। आने वाले तीन-चार सालों में अभाविप के द्वारा इस तरह के और कार्यक्रम चलाये जायेंगे जिससे युवाओं में समाज के प्रति करुणा या सेवा का भाव विकसित हो।

▪ सामाजिक अनुभूति सर्वेक्षण के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त समस्याओं की जानकारी मिली होगी, कोई ऐसी जानकारी जिससे आपका हृदय द्रवित हो गया हो ?

जब हमारे कार्यकर्ता राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में सर्वेक्षण के लिए गया तो पता चला कि वहाँ की महिलाओं को दो बाल्टी पानी लाने में ही पूरा दिन बीत जाता है। आज़ादी के इतने साल बाद भी वहाँ पर पानी की सुविधा नहीं है। इसी तरह देश के कई भागों में आज भी सामाजिक भेदभाव की जानकारी मिली,जो कि चिन्ता का विषय है। देश के कई भागों में आज भी लोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं।

▪ बीते साल में देश के कई शैक्षणिक संस्थानों में देशविरोधी कार्यक्रम आयोजित किये गये, यहाँ तक कि देशविरोधी नारे भी लगाए गये। उक्त घटना के बाद राष्ट्रवाद को लेकर फिर से बहस शुरू हो गई, अभाविप के अनुसार राष्ट्रवाद का मूल स्वरूप क्या है ?

बीते नौ फरवरी को देश के प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जिस तरह के देशविरोधी नारे लगाये गए, यह भारतीय इतिहास के लिए काला दिन था। भारत की मिट्टी में पैदा हुए, यहां पर पले-बढ़े, यहाँ का अन्न खाते हैं, उनकी हर सांस में भारत की वायु प्रवाहित होती है और इस देश की बर्बादी के नारे लगाते हैं, देश के टुकड़े होने की बात करते हैं, कितने शर्म की बात है। हमारे देश के अंदर कुछ लोग हैं जो खाते तो हमारे देश का हैं और गुणगान किसी और देश का करते हैं। खासकर, वामपंथी विचारधारा के लोग, ये वही लोग हैं जिन्होंने भारत-चीन युद्ध के समय भारत का समर्थन करने के बजाय चीन के समर्थन में खड़े थे। वामपंथ आजतक मानसिक रूप से इस देश से अपने-आप को जोड़ नहीं पाया। इन वामपंथियों का पोल खोलने के लिए आनेवाले वर्षों में अभाविप द्वारा देशभर के शैक्षणिक संस्थानों में बौद्धिक चर्चा का आयोजन किया जायेगा ताकि छात्र इन देशविरोधी तत्त्वों के असली चरित्र से परिचित हो सकें। राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव, लगाव, यहाँ की संस्कृति का सम्मान ही सच्चा राष्ट्रवाद है। राष्ट्रवाद पर बहस पूरी तरह से बकवास है। किसी भी देश के नागरिक को अपने देश के प्रति श्रद्धा होना बहस का विषय नहीं हो सकता।

▪ आपके अनुसार नोटबंदी से आर्थिक भ्रष्टाचार में कितनी कमी आयेगी ?

अभाविप हमेशा से ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध रहा है। चाहे वह आर्थिक भ्रष्टाचार और या राजनीतिक, हर मुद्दे पर अभाविप की स्पष्ट राय है कि भ्रष्टाचार को यह देश कभी सहन नहीं करेगा। भ्रष्टाचार के खिलाफ परिषद् के द्वारा पहले भी 'यूथ अगेंस्ट करप्शन' अभियान चलाया जा चुका है। 2003 में ही हमने सरकार से बड़े नोटों के प्रचलन पर रोक की मांग की थी। सरकार के द्वारा 500 और 1000 के नोटों पर प्रतिबंध लगाने से देश की अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता आयेगी। कालाधन देश की अर्थव्यवस्था को खोखला कर रहा है, नोटबंदी कालाधन को रोकने की दिशा में बड़ा कदम है।

▪ नई शिक्षा नीति आनेवाली है, इसमें परिषद् किस प्रकार का बदलाव चाहती है ?

सरकार नई शिक्षा नीति लानेवाली है, विद्यार्थी परिषद् सरकार से यह मांग करती है कि वो एक ऐसी शिक्षा नीति को लेकर आये जो सस्ती, सुलभ तथा रोज़गार के साथ-साथ युवाओं में चरित्र का निर्माण करे। शिक्षा के व्यापारीकरण को रोका जाय। 30 सालों बाद किसी सरकार के द्वारा शिक्षा में सुधार की बात की गई है तो स्पष्ट है कि देश की शिक्षा को लेकर सरकार में कहीं-न-कहीं चिंता है। बीते दिनों अभाविप के एक प्रतिनिधिमण्डल ने केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री से मिलकर अपनी मांगों से उन्हें अवगत करा दिया था। ■

प्रिय मित्रो !

शिक्षा-क्षेत्र की प्रतिनिधि-पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का जनवरी, 2017 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें इंदौर में संपन्न राष्ट्रीय अधिवेशन के एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों और ख़बरों का संकलन किया गया है। आशा है, यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें :

संपादक, 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
'छात्रशक्ति भवन', 26 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-110002.
फोन : 011-23216298
वेबसाइट : www.abvp.org
chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/chhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) यात्रा

विविधता में एकता का मूल मंत्र लेकर 1966 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा देश के सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के बीच भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'अन्तरराज्य छात्र जीवन दर्शन' के नाम से अभिनव प्रकल्प प्रारंभ किया गया। जागरुकता, एकात्मता एवं स्वालंबन के त्रि-सूत्रीय लक्ष्य को लेकर पूरे देश में हर वर्ष सील यात्रा का आयोजन होता है।

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र प्राकृतिक संपदा एवं सांस्कृतिक वैभव का असीम भंडार है जो कि संपूर्ण भारत में नहीं अपितु पूरी दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ है। यहां के विभिन्न समुदायों की अनेक भाषाएँ, खूबसूरती और उनकी परंपराएं एक ऐसी अनूठी मिसाल पेश करती हैं जिसे देखकर कोई भी व्यक्ति सम्मोहित हुए बिना नहीं रह सकता।

विविधता में एकता के मूल मंत्र को लिए हुए 1966 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा देश के सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के बीच भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **'अन्तरराज्य छात्र जीवन दर्शन'** के नाम से अभिनव प्रकल्प प्रारम्भ किया गया। जागरुकता, एकात्मता एवं स्वालंबन के त्रि-सूत्रीय लक्ष्य को लेकर पूरे देश में हर वर्ष **सील (SEIL)** यात्रा का आयोजन होता है। 1966 से लेकर आज तक सील के तहत सुदूर पूर्वोत्तर क्षेत्रों में परस्पर आपसी संवाद को बढ़ाकर पूर्वोत्तर के युवाओं को देश के शेष भागों को जानने तथा शेष भारत के युवाओं को भी पूर्वोत्तर को जानने के लिए मौका प्रदान करता है ताकि राष्ट्रीय एकता और

एकात्मता की भावना को देश के शेष भागों में जाकर समझे, साथ ही देश के लोग पूर्वोत्तर के भागों को समझने का प्रयास करें।

'सील' के द्वारा वर्ष 2016 में राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा 4 दिसंबर को गुवाहाटी से शुरू हुई, जो देश के 12 राज्यों के कुल 18 शहरों का भ्रमण करने के पश्चात् 30 दिसंबर को इंदौर में समाप्त हुई। इस यात्रा में पूर्वोत्तर के सात राज्यों के कुल 79 प्रतिनिधि ने भाग लिया, जिसमें 30 छात्राएँ और 49 छात्र थे। सील यात्रा के संयोजक मनोज निखरा बताते हैं कि इस यात्रा में पूर्वोत्तर के सात राज्यों के 22 जिलों के सुदूर क्षेत्र में रहनेवाले 24 जनजाति समुदाय से संबंध रखनेवाले युवा/छात्र/छात्राएँ शामिल थीं। यह यात्रा दो भागों में बाँटकर निकाली गई जिसके पहले दल में ये छात्र उत्तर भारत के हरिद्वार, देहरादून, लखनऊ, हिसार, कुल्लू-मनाली, अजमेर, अमृतसर आदि जगहों होते हुए इंदौर पहुँचे। दूसरा दल ओडिशा के बालेश्वर, राजमंदरी, चेन्नई, मुम्बई, सोलापुर, वड़ोदरा होते हुई इंदौर पहुंचा। इस क्रम में इन छात्रों का देश के नौ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में भी जाना हुआ। श्री निखरा के अनुसार देशभर के 179 परिवार में ये लोग रुके हुए थे, इन युवाओं के लिए ये सारे अपने परिवार की तरह हो गये हैं। ओडिशा के बालेश्वर में युवाओं को ग्राम दर्शन से रू-ब-रू कराया गया, जहाँ पर इन लोगों का भव्य स्वागत हुआ।

श्री निखरा ने बताया कि तमिलनाडु में तूफ़ानी चक्रवात आने के बावजूद वहाँ के कार्यकर्ताओं ने यात्रा पर कोई असर नहीं पड़ने दिया। हमारे साथ यात्रा में शामिल युवाओं को महसूस ही नहीं होने दिया कि यहाँ पर इतना भीषण चक्रवात आया है। हरियाणा के मुख्यमंत्री इन छात्रों से मिलने खुद हिसार आये और छात्रों के सम्मान में कार्यक्रम भी आयोजित कराया। इन प्रतिनिधियों में से कई छात्र मीडिया से पहली बार मुखातिब हुए। इस दौरान इन लोगों ने समुद्र तट पर रहनेवाले लोगों के जनजीवन को समझने का प्रयास किया। यह यात्रा आनेवाले दिनों में पूर्वोत्तर के विकास में सहभागी होगी।

इसी क्रम में अंतरराज्य जीवन दर्शन के तहत हरियाणवी संस्कृति व यहां के ग्रामीण परिवेश को जानने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों– असम, मिजोरम, नागालैंड व त्रिपुरा राज्यों के 40 विद्यार्थियों का एक दल हिसार पहुँचा। विद्यार्थियों के हिसार रेलवे स्टेशन पर पहुँचने पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की हिसार इकाई ने उनका पारम्परिक तरीके से तिलक लगाकर व फूल-मालाओं के साथ जोरदार स्वागत किया।

हिसार नागरिक अभिनंदन समारोह हरियाणा कृषि

पूर्वोत्तर के छात्रों ने कहा कि जो प्यार उन्हें हिसार के लोगों ने दिया है, वे उन्हें कभी नही भूला पाएँगे। उनका दूसरा परिवार अब हिसार में भी हो गया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में हरियाणा की संस्कृति की अलग पहचान है। जैसा पूर्वोत्तर के कुछ लोग यहाँ के बारे में अलग सोचते हैं, वैसा कुछ नहीं है।

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय सभागार में आयोजित किया गया जिसमें हरियाणा एवं पूर्वोत्तर के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि कृषि मंत्री ओ. पी. धनखड़ ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजवि के कुलपति प्रो. टकेश्वर ने की। इस अवसर पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति के. पी. सिंह, लुवास के कुलपति श्रीकांत शर्मा आदि उपस्थित थे।

पूर्वोत्तर के छात्रों ने चखा सरसों का साग व देशी घी का हलवा

सील के तहत हिसार पहुंचे पूर्वोत्तर के छात्रों ने रविवार को गाँव मंगाली में ग्राम दर्शन किया। गाँव पहुंचने पर ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों, ग्रामीणों व गांव के खिलाड़ियों ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया। गाँव की गलियाँ 'भारतमाता की जय' व 'वंदेमातरम्' के उद्घोष से गूंज रही थीं। छात्रों ने मंगाली गांव में चलनेवाले मनकों (माला के मोती) के लघु उद्योगों के बारे में भी विस्तार से जानकारी ली। गांव में उन्होंने हरियाणा की ग्रामीण संस्कृति को नजदीक से देखा व ग्रामीणों से भी रू-ब-रू हुए। गाँव में सुबह पूर्वोत्तर के इन छात्रों ने सरसों के साग व देशी घी के हलवे का भी आनन्द लिया। गाँव पहुँचने पर छात्रों में ख़ासा उत्साह देखने को मिल रहा था तो पूर्वोत्तर के इन छात्रों से मिलने के लिए भारी संख्या में ग्रामीण भी वहाँ उनके स्वगात के लिए पहुँचे थे। ग्राम दर्शन के बाद पूर्वोत्तर के छात्र गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में प्रदेश के वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु से भी हुए रू-ब-रू हुए तो वित्तमंत्री ने भी अपना जन्मदिन पूर्वोत्तर के छात्रों के साथ मनाया।

पूर्वोत्तर के छात्रों से खुद मिलने आए हरियाणा के मुख्यमंत्री

अपनी यात्रा के अन्तिम दिन पूर्वोत्तर के छात्रों ने प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर से मुलाकात की। इस दौरान खट्टर ने छात्रों से पूर्वोत्तर के बारे में जानकारी ली और उनका परिचय लेते हुए छात्रों के साथ नाश्ता किया। कार्यक्रम में पहुँचने पर अभाविप की ओर से मुख्यमंत्री को पारम्परिक रामायण भेंट कर सम्मानित किया गया। यहाँ छात्रों ने हरियाणवी संस्कृति को नजदीक से जाना। छात्रों ने बैलगाड़ी की सवारी का लुत्फ भी उठाया।

इसके बाद पूर्वोत्तर के छात्र शहर के विश्वास स्कूल, लाहौरिया स्कूल, विद्या भारतीय स्कूल, सेंट सोफिया स्कूल, ठाकुरदास भार्गव स्कूल, कैंपस स्कूल एच.ए.यू., राजकीय स्कूल पटेल नगर व राजकीय स्कूल गंगवा के छात्रों से रू-ब-रू होने पहुँचे। स्कूलों में छात्रों ने पूर्वोत्तर की विशेषताएँ यहाँ के छात्रों को बताईं तो वहीं उन्होंने पूरी यात्रा का अनुभव स्कूलों के बच्चों के साथ साझा किया। पूर्वोत्तर के छात्रों ने कहा कि जो प्यार उन्हें हिसार के लोगों ने दिया है, वे उन्हें कभी नहीं भूला पाएँगे। उनका दूसरा परिवार अब हिसार में भी हो गया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में हरियाणा की संस्कृति की अलग पहचान है। जैसा पूर्वोत्तर के कुछ लोग यहाँ के बारे में अलग सोचते हैं, वैसा कुछ नहीं है। स्कूलों में संबोधन के बाद पूर्वोत्तर के छात्रों ने जी.जे.यू. के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार से मुलाकात की और उनके साथ दोपहर का भोजन करते हुए अपना अनुभव उनके साथ साझा किया। ■

क्या कहते हैं सील-प्रतिभागी...

सील के माध्यम से मैं उत्तर-भारत में हरिद्वार, लखनऊ, अमृतसर, हिसार, अजमेर और इंदौर गई। जीवन में पहली बार मैं अपने राज्य से बाहर निकली। सील यात्रा के दौरान में जिस मेजबान के यहां रुकी, उनलोगों ने अपने परिवार की सदस्य की तरह प्यार दिया। यहां आने के बाद पता चला कि मेरा एक और परिवार है, जो हमारे लिए फ़िक्रमंद है।

—पोञ्चमी, नागालैण्ड

मैं असम के गोलापाड़ा ज़िले के एक छोटे से गाँव से आता हूँ, मैंने कभी जीवन में नहीं सोचा था कि इतने कम समय में भारत भ्रमण कर लूँगा। मेरे जीवन का सपना था कि कभी बाघा बॉर्डर देखूँ, इसके बारे में सिर्फ़ सुना था। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का आभारी हूँ कि उन्होंने मेरा सपना पूरा किया। परिषद् से जुड़ने के बाद देश के बारे में काफ़ी कुछ जानने और देखने को मिला। सील यात्रा के दौरान मुझे कभी अपने घर की याद नहीं आई, जिस परिवार के यहां रुका था वो इतना ख्याल रखते थे जैसे कि मैं उनका ही बेटा हूँ।

—पवित्र आभा, असम

सील-यात्रा मेरे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण यात्रा है, जीवन में पहली बार घर से बाहर निकली। मैं अपने अनुभव को शब्दों में बयां नहीं कर सकती। अपने जीवन में पहली बार मैं ट्रेन पर चढ़ी, ट्रेन में चढ़ने के बाद मैं ऐसा महसूस कर रही थी कि स्वप्न में हूँ। सील-यात्रा के माध्यम से मैंने भारत के दक्षिणी राज्यों का भ्रमण किया जहाँ पर हमने समुद्री तटों को देखा, समुद्र को इससे पहले तस्वीरों में देखा करती थी। घर से बाहर निकलने के बाद इतनी बड़ी-बड़ी इमारतों को देखकर मैं अचंभित हो गई।

—सानिया करी, अरुणाचल प्रदेश

असम के बाहर मैं पहली बार नहीं निकली थी, इसके पहले भी मैं कई बार असम से बाहर घुमने जा चुकी हूँ लेकिन सील के माध्यम से पहली बार निकली। इसके पहले जहाँ भी जाती थी तो हमलोगों को होटल में रुकना पड़ता था। परन्तु सील-यात्रा में अलग अनुभव मिला, पूरे यात्रा के दौरान हम लोग कभी होटल में नहीं रुके बल्कि वहाँ के स्थानीय परिवार के यहाँ रुकते थे। जिस परिवार में रुके, वहाँ उन्होंने कभी महसूस नहीं होने दिया कि मैं उनके यहाँ मेहमान हूँ, उन्होंने मुझे अपने बच्चों जैसा लाड़-प्यार दिया। सील-यात्रा के माध्यम से ओडिशा में बालेश्वर, आंध्र प्रदेश के राजमन्द्री, तमिलनाडु में चेन्नई, महाराष्ट्र में सोलापुर आदि स्थानों पर गई। जीवन में पहली बार मैंने समुद्री तट को देखा। राजमन्द्री का कुचुपुड़ी नृत्य काफ़ी अनोखा था, अलग-अलग भाषा होने के बावजूद कभी कोई समस्या नहीं आई। जब कभी कोई बात समझ में नहीं आती तो इशारों से एक दूसरे से बात कर लेती थी।

—जोनाली नाट्य, असम

"आज का युवा निष्क्रिय नहीं, सक्रिय है" : आम्बेकर

राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान 'बढ़ते युवा : बदलता भारत' विषय पर बोलते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकर ने राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका पर डाला प्रकाश

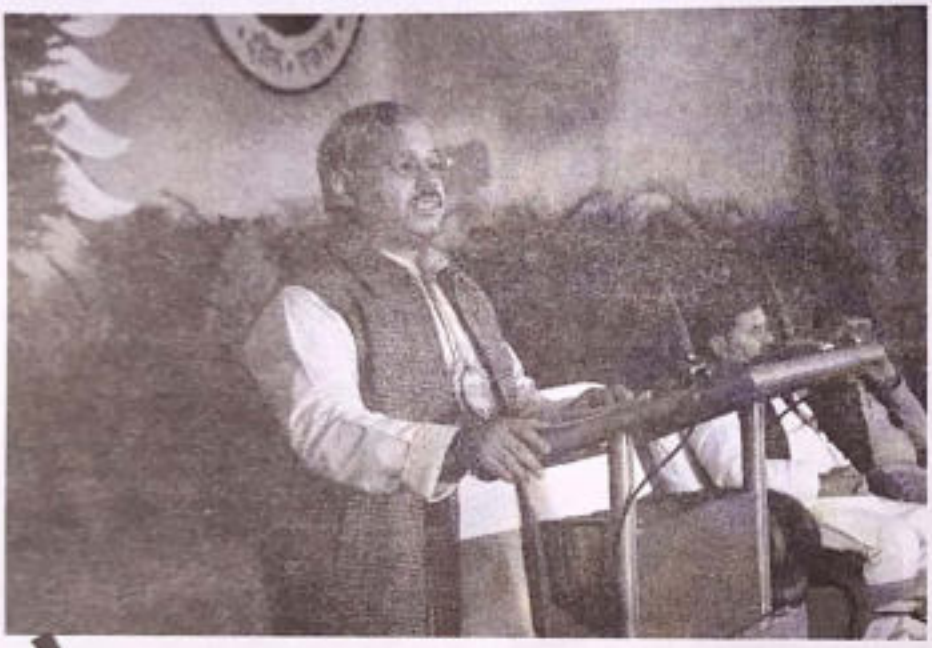

देश में आमूलचूल परिवर्तन के लिए अब टुकड़ों में कार्य करने की ज़रूरत नहीं बल्कि मिशन मोड की जरूरत है। हमें गर्व है कि आपातकाल के दौरान हमने बड़ी भूमिका निभायी। आज का युवा निष्क्रिय नहीं, सक्रिय है। चाहे भ्रष्टाचार का मुद्दा हो, राजनीति की बात हो, पर्यावरण की बात हो, हर मुद्दे पर युवा वर्ग काफ़ी सक्रिय है। पर्यावरण की रक्षा ही हमारी संस्कृति है। किसी ने इंग्लैण्ड का, किसी ने अमेरिका का, किसी ने रूस का तो किसी ने चीन का अनुसरण कर आगे बढ़ने की बात की। लेकिन अभाविप ने भारतमाता की चरणों की आराधना कर आगे बढ़ने की बात की। ये बातें अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन ''बढ़ते युवा - बदलता भारत'' विषय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहीं।

श्री आंबेकर ने क्रांति के बारे में बताते हुए कहा कि क्रांति का मतलब सिर्फ हिंसा ही नहीं, बल्कि रचनात्मक रूप से कार्य करना भी क्रांति है। क्रांति का मूल अर्थ है बदलाव। यदि देश को बदलना है तो सबसे पहले युवाओं को बदलना होगा। वर्तमान समय में सिर्फ राजनीति में ही नहीं बल्कि शिक्षा सहित पूरी व्यवस्था में बदलाव की ज़रूरत है। मज़बूत व्यक्ति ही बड़ा बदलाव ला सकता है। मज़बूती का अर्थ चारित्रिक, नैतिक, व्यावहारिक रूप से मज़बूत होना है न कि सिर्फ़ शारीरिक रूप से। स्वार्थी लोग कभी बदलाव नहीं ला सकते, समर्पित लोग ही बदलाव ला सकते हैं।

नोटबंदी की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम एक ऐसी मुद्रा चाहते हैं, जो दुनिया के किसी कोने में खड़े होकर भी अपना काम चंद मिनटों में कर सकते हैं। समय आ गया है भारत का रुपया मज़बूत हो और भारतीय दूतावास के बाहर दूसरे देश के लोग कतार लगायें।

युवाओं का उत्साहवर्धन करते हुए श्री आंबेकर ने कहा कि **कैसे कह दूं कि थक गया हूं मैं, न जानें! किस-किस का हौसला हूं मैं।** समस्याओं की लिस्ट बहुत बड़ी है, समाधान की लिस्ट छोटी है जिसमें सबसे ऊपर आप हैं। सतत संघर्ष से ही बदलाव आएगा और यह संघर्ष संकल्प आत्मीयता और प्रेम से होना चाहिए। जीवन-दर्शन को बताते हुए उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, इसे जानना चाहिए वरना हमें क्या करना चाहिए, जीवनभर पता नहीं चल पायेगा। आजकल हमारे देश में भी कुछ नेता हैं जिन्हें ये नही पता कि उन्हें क्या करना है? भारत में पहले दो प्रकार की सेना होती थी। एक जो हमारी सीमा की रक्षा करती थी, दूसरी वो, जो देश के अंदर वैचारिक लड़ाई में तैनात रहते थे। लोग कठोर-से-कठोर क़ानून बनाने की बात करते हैं। सच तो यह है कि वर्तमान में क़ानून की सूची काफ़ी लंबी हो चुकी है। समाज को समस्याओं का समाधान स्वयं ढूँढ़ना होगा, क़ानून बनाने से कुछ नहीं होगा। ■

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव क्र. 1

शैक्षणिक परिदृश्य

प्राचीन काल में शिक्षा के केंद्र के रूप में विश्वविख्यात रहे भारतवर्ष में 1,000 वर्षों से अधिक गुलामी के काल ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था को गहरा आघात पहुँचाया। अंग्रेज़ी काल में मैकाले-नीति पर बनी शिक्षा-पद्धति देश स्वतंत्र होने के पश्चात् भी न्यूनाधिक परिवर्तनों सहित चलती रही। फलतः आज देश की स्वतंत्रता के 69 वर्ष बीतने के बाद भी शिक्षा-क्षेत्र की स्थिति बदहाल और दयनीय बनी हुई है और व्यापक सुधार व परिवर्तन की बाट जोह रही है।

देश को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनाने और अपने नागरिकों के कल्याण के लिए माइक्रो स्तर पर सुधार की आवश्यकता है। यू.जी.सी. द्वारा जारी अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण : 2014-15 के अनुसार देश में सकल नामांकन दर का राष्ट्रीय औसत मात्र 25.3 है जिसमें अनुसूचित जाति का 19.1 और अनुसूचित जनजाति का 13.7 है, जो सोचनीय है। इस सरकारी आंकड़े में भी देश के विभिन्न राज्यों में भारी असमानता है– तमिलनाडु में सर्वाधिक 45 है तो बिहार में सबसे कम 13.9 है। इस असमानता को राज्य स्तर पर और सामाजिक वर्ग के स्तर पर दूर करने की आवश्यकता है।

देश में उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की संख्या 13,19,295 है, परंतु अध्ययनरत छात्रों के अनुपात में यह बहुत कम है। फलतः छात्र-शिक्षक अनुपात मात्र 24 है यानी 24 छात्रों के लिए 1 शिक्षक।

सरकारी आँकड़ों की दृष्टि से देश में चल रहे महाविद्यालयों की संख्या 38,498 प्रभावी दिखाई पड़ती है, परन्तु 18-23 आयुवर्ग की जनसंख्या-दृष्टि से देखने पर यह संख्या आवश्यकता से काफ़ी कम प्रतीत होती है। देश में 18-23 वर्ष आयुवर्ग के प्रति 1 लाख की संख्या के लिए मात्र 27 महाविद्यालय हैं। इस मानक पर भी राज्यों में घोर असमानता है, इस आयु-वर्ग के प्रति एक लाख की संख्या पर एक तरफ जहाँ तेलंगाना में 60, कर्नाटक में 49, आंध्र प्रदेश में 47 कॉलेज़ हैं, वहीं दिल्ली में मात्र 09, झारखण्ड में 08 तथा बिहार में केवल 07 हैं। अभाविप का यह सुविचारित मत है कि देश की शिक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु इन सभी क्षेत्रों में व्यापक सुधारों की आवश्यकता है जिसके लिए सरकार द्वारा शिक्षा पर अधिक वित्त खर्च करने की आवश्यकता है। अभाविप अपने 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान केंद्र सरकार से शिक्षा हेतु बजट का दसवाँ हिस्सा या जी.डी.पी. का 6 प्रतिशत वित्त आवंटित करने की मांग दोहराती है।

शिक्षा के बढ़ते व्यापारीकरण से देश में अच्छी शिक्षा चंद विशिष्ट अवसरप्राप्त लोगों तक सीमित होती जा रही है। एक ओर जहाँ व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शुल्क-संरचना में लगातार वृद्धि हो रही है और उनमें प्रवेश हेतु मैनेजमेंट द्वारा कई जगह मोटी रकम वसूली जाती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा की गुणवत्ता और उसके रोज़गार से संबंध पर ध्यान कम होता जा रहा है। अभाविप का यह दृढ़ मत है कि यह केंद्र व राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है कि वे सभी विद्यार्थियों को सस्ती, सुलभ व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करें।

यह एक चिन्तनीय विषय है कि देशभर के विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में शिक्षकों के हज़ारों पद रिक्त हैं। कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, जैसे– दिल्ली विश्वविद्यालय भी 50 प्रतिशत से अधिक संविदा पर नियुक्त शिक्षकों के भरोसे चल रहे हैं। अभाविप का यह राष्ट्रीय अधिवेशन केंद्र व राज्य सरकारों से शिक्षकों के रिक्त पड़े पदों को अविलम्ब भरने की मांग करता है। साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में अग्रसर होते हुए शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिए जाने की मांग करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में देशभर में बी.एड. और एम.एड. के पाठ्यक्रमों में भी संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

देशभर के विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर स्कीम लागू करने के अनेक दुष्परिणाम दिख रहे हैं। सेमेस्टर-प्रणाली को वापस लेने के लिए अभाविप ने कई राज्यों में व्यापक आंदोलन किया है। अभाविप केंद्र व राज्य सरकारों से यह मांग करती है कि विद्यार्थियों को केवल परीक्षाओं तक सीमित करनेवाली सेमेस्टर-प्रणाली को गैर-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में स्नातक स्तर पर वापस लिया जाये।

राज्य विश्वविद्यालयों में परीक्षा-विभाग की दुर्व्यवस्था के कारण कई जगह न परीक्षाएँ समय पर होती हैं, न उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन और न ही परिणामों की घोषणा। अभाविप अपने 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान राज्य विश्वविद्यालयों के परीक्षा-विभागों को व्यवस्थित व सुदृढ़ करने की मांग करती है।

कौशल-शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु सरकार के प्रयासों का समुचित परिणाम नहीं मिल पा रहा है। अभाविप सरकार से यह मांग करती है कि कौशल शिक्षा के लिए अलग संस्थान खड़े करने के बजाय स्थापित शिक्षा-संस्थानों में ही पाठ्यक्रमों में कौशल-शिक्षा जोड़ी जाये।

हाल ही में महाराष्ट्र सरकार द्वारा विश्वविद्यालयी शिक्षा हेतु पारित नये अधिनियम में सीनेट, सिंडिकेट व बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़ में छात्र-प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने पर अभाविप इसका हार्दिक अभिनन्दन करती है तथा देश के सभी राज्यों के शिक्षण-संस्थानों में इसी प्रकार छात्र-प्रतिनिधित्व देने की मांग करता है।

इस वर्ष चिकित्सा-पाठ्यक्रमों हेतु शुरू की गई एनईईटी (नीट)-परीक्षा का विद्यार्थी परिषद् स्वागत करती है और अगले वर्ष, विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी इसका आयोजन कर, अन्य किसी भी प्रकार की छूट न देने की मांग करती है। साथ ही, केंद्र सरकार से यह मांग करती है कि सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में इसी प्रकार अखिल भारतीय परीक्षाओं का आयोजन कर छात्रों को प्राइवेट मैनेज़मेंट की मनमानी से मुक्ति दिलाये। ■

युवा पुरस्कार

ड्रग्स के ख़िलाफ़ जारी रहेगी हमारी लड़ाई : आर. के. विश्वजीत सिंह

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार 2016, श्री आर. के. विश्वजीत सिंह (सामाजिक कार्यकर्ता एवं संस्थापक, एनिमल जिम, मणिपुर) को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनको नशा एवं एड्स से मुक्ति की लड़ाई तथा अध्यात्म एवं नियमित व्यायाम द्वारा स्वस्थ व चरित्रवान् युवाओं के निर्माण के अग्रणी कार्य के लिये दिया गया है।

श्री आर. के. विश्वजीत सिंह एक शारीरिक प्रशिक्षक एवं सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने मणिपुर में एनिमल जिम संस्था के माध्यम से हज़ारों युवाओं को स्वस्थ तथा सैकड़ों युवकों को नशाखोरी से बाहर निकालने में सराहनीय कार्य किया है। कई एच.आई.वी./एड्स प्रभावित युवा भी उनके प्रकल्प के माध्यम से जुड़े हैं। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा उनको व्यायाम से 'नशामुक्त स्वस्थ युवा' ध्येय-पूर्ति में लगे कार्य के लिए पुरस्कार भी दिया जा चुका है।

युवा पुरस्कार से सम्मानित आर. के. विश्वजीत सिंह ने ड्रग्स, नशाखोरी, अध्यात्म, एड्स आदि सभी मुद्दों पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से खुलकर बात की। उन्होंने मणिपुर के युवाओं में बढ़ते नशा के प्रचलन एवं उसके समाधान पर अपने विचार रखे।

युवाओं में बढ़ते नशा के प्रचलन के बारे में आर. के. विश्वजीत सिंह का कहना है कि आज के युवा अध्यात्म से बिलकुल कट गये हैं, जिस कारण उनमें चरित्र-निर्माण सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए बताते हैं कि मेरे कई मित्र ड्रग्स के चपेट में आकर अपनी जान गँवा बैठे, दोस्तों की मृत्यु ने मुझे अंदर से झकझोरकर रख दिया। उसी दिन मैंने संकल्प लिया कि मणिपुर के युवाओं को ड्रग्स और नशे के चपेट से निकालकर दम लूँगा। शुरू-शुरू में शारीरिक सौष्ठव हेतु एक छोटा-सा जिम खोला, धीरे-धीरे मेरे जिम में युवाओं की संख्या बढ़ती गई। आर. के. विश्वजीत बताते हैं कि वे केवल जिम में बॉडी बिल्डिंग का ही काम नहीं करते हैं बल्कि इसके साथ-साथ प्रत्येक दिन दो-तीन घंटे आध्यात्मिक वर्ग भी लगाते हैं जिससे युवाओं में मानसिक शक्ति का विकास

क्या है प्रा.यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार ?

प्रा. यशवंतराव केलकर, जिनका दुनिया के सबसे बड़े छात्र संगठन अभाविप के शिल्पकार के रूप में तथा उसका विस्तार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, उनकी स्मृति में दिया जाता है। यह पुरस्कार 1991 से प्रतिवर्ष दिया जा रहा है। यह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् तथा विद्यार्थी निधि न्यास का संयुक्त उपक्रम है, जो शिक्षा और छात्रों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। विभिन्न समाजपयोगी काम करनेवाले सामाजिक कार्यकर्ताओं के कार्य को प्रोत्साहन देना, उनके कार्य को समाज के सम्मुख लाना और ऐसे युवाओं के प्रति समुचे युवा वर्ग की कृतज्ञता प्रकट करना एवं युवाओं में ऐसे काम करने की प्रेरणा उत्पन्न करना यह इस युवा पुरस्कार का प्रयोजन है। इस पुरस्कार में 50,000 की नगद राशि, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न समाविष्ट है।

62वाँ ABVP

राष्ट्रीय अधिवेशन

24 से 27 दिसम्बर 2016 इन्दौर

मंच पर विराजमान माँ सरस्वती और स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा

शोभा यात्रा : पारंपरिक वेशभूषा में प्रतिनिधि

महू से निकली आम्बेडकर संदेश यात्रा का स्वागत करते अभाविप कार्यकर्ता

सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य करती छात्रायें

62वाँ ABVP

राष्ट्रीय अधिवेशन

24 से 27 दिसम्बर 2016 इन्दौर

प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं इंदौर की महापौर मालिनी गौड़, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर, आम्बेडकर सोसायटी के अध्यक्ष भन्ते संघशील

ध्वजारोहण के बाद गुब्बारा छोड़ते अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर व महामंत्री विनय बिदरे

ध्वज-मण्डल के साथ अभी तक हुए 61 र

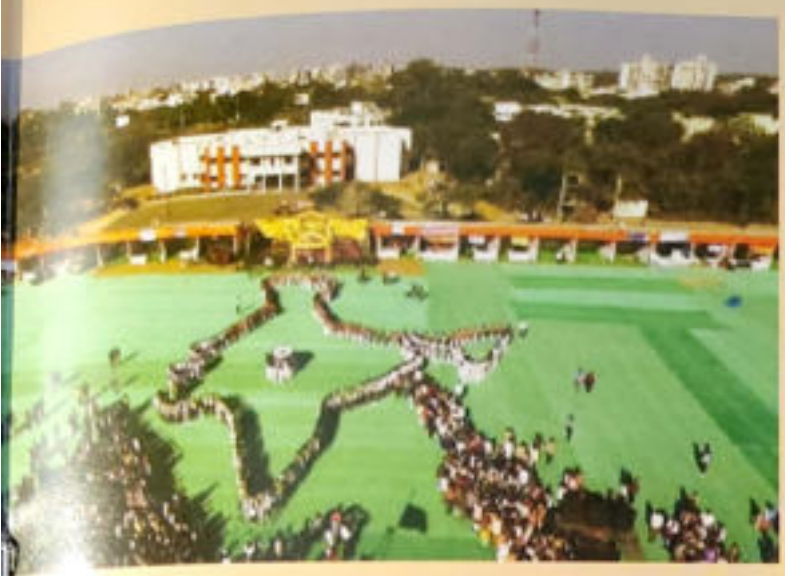

मानव-शृंखला द्वारा बनाया गया भारत का मानचित्र

मल्लखम्भ का प्रदर्शन करते छात्र

ष्ट्रीय अधिवेशनों के लहराते ध्वज

नेपाल से आये प्रतिनिधियों के साथ अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर एवं राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे

देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में जीते छात्र संघ पदाधिकारियों का अधिवेशन मंच पर सम्मान

62वाँ ABVP

राष्ट्रीय अधिवेशन

24 से 27 दिसम्बर 2016 इन्दौर

भारतमाता का भव्य स्मारक

खुला अधिवेशन में मंचासीन छात्र-नेता

इंदौर की पहचान राजवाड़ा की प्रतिकृति

बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर का स्मारक

होता है। आगे वे बताते हैं कि ड्रग्स के खिलाफ जागरूक करने के उद्देश्य उन्होंने 2003 में 'इम्पोर्टेंस ऑफ बॉडी बिल्डिंग' के नाम से एक डॉक्यूमेन्ट्री बनाई जिसे देखने के बाद अधिकतर युवा नशा करने से परहेज करते हैं और शारीरिक मज़बूती पर ध्यान देने लगते हैं। विश्वजीत खुद भी एक बॉडी बिल्डर हैं। मिस्टर मणिपुर की प्रतियोगिता में वह तीसरे स्थान पर आए थे।

जिम में प्रयोग होनेवाले सामान भी वे खुद बनाते हैं, क्योंकि मणिपुर के युवा आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हैं। बेकार पड़े लोहे को इकट्ठा कर जिम में प्रयोग होनेवाले औज़ार का शक्ल देते हैं, ताकि कम खर्च में युवा आसानी से व्यायाम कर सके। श्री विश्वजीत कहते हैं कि मिस्टर इण्डिया प्रदीप कुमार हमारे यहाँ से आया है, उन्होंने मेरे यहां से ही जिम का सामान खरीदा था, वह खुद एचआईवी पॉजिटिव है। एचआईवी के बारे में बताते हुए कहा कि मैं एचआईवी को नियंत्रित करने के लिए पारंपरिक जड़ी-बूटी का प्रयोग करता हूं, उससे पीड़ित की स्थिति नियंत्रण में रहती है और धीरे-धीरे एड्स से भी मुक्ति मिल जाती है। उन्होंने कहा कि पहले तो लोग अपनी परेशानी बताने से कतराते थे लेकिन अब खुद आकर अपनी परेशानियों को साझा करने लगे हैं। 2014 में उन्होंने एड्स पीड़ित मरीज़ों की स्थिति में काफ़ी सुधार किया था, जिसकी चर्चा देश के विभिन्न अख़बारों में भी की गई थी। 2012 में ड्रग्स के खिलाफ काम करने के चलते उन्हें पुरस्कार भी दिया जा चुका है, मणिपुर की जेल के अंदर भी उन्होंने जिम खोल रखा है। आगे आनेवाले दिनों में पूर्वोत्तर सहित पूरे भारत के युवाओं को नशामुक्त करने की उनकी योजना है। ■

कर्नाटक के दिव्यांग छात्र सी. मंजुनाथ ने अभाविप पर की पीएच. डी.

'मंज़िले उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है। पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती हैं'– उक्त पंक्ति को साबित किया है कर्नाटक के रहनेवाले दिव्यांग छात्र सी. मंजुनाथ ने। दोनों आँखों से दिव्यांग छात्र मंजुनाथ ने ऐसा कारनामा कर दिखाया है, जिसे सुनते ही किसी का भी सीना गर्व से चौड़ा हो जाए। आज कई ऐसे छात्र हैं जिनके आँख होने के बावजूद अपने कॅरियर को लेकर अंधे बन बैठे हैं, वहीं दोनों आँख से दिव्यांग छात्र मंजुनाथ ने परंपरागत लीक से हटकर 'कर्नाटक में छात्र आंदोलन और अभाविप की भूमिका' विषय पर मैसूर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. पूरी की है।

श्री मंजुनाथ कर्नाटक राज्य के तुमकुर ज़िले के एक छोटे-से गांव कथीक्यनहल्ली के रहने वाले हैं। शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद कभी इन्होंने अपने जीवन में इसे रुकावट नहीं बनने नहीं दिया। सी.मंजुनाथ वर्तमान में महारानी महिला महाविद्यालय, मैसूर में अतिथि शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। मैसूर विश्वविद्यालय से परास्नातक (राजनीतिशास्त्र) की पढ़ाई करने के बाद अध्यापन कार्य में लग गये। जब इन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय में पीएच. डी. हेतु 'कर्नाटक में छात्र आंदोलन : अभाविप' विषय को चुना, तब विश्वविद्यालय के शिक्षक भी अचम्भित थे, लेकिन इनकी इच्छाशक्ति के सामने वे भी नतमस्तक हो गये।

यहाँ आपको बता दें कि सी. मंजुनाथ का अभाविप से पुराना नाता रहा है। श्री मंजुनाथ अपने छात्रजीवन से ही अभाविप से जुड़े हुए हैं। यहां तक कि अपने शुरूआती दिनों में अभाविप मैसूर कार्यालय में रहकर कुछ दिनों तक पढ़ाई की। श्री मंजुनाथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, 'मंढण' के नगर मंत्री व कनार्टक प्रांत के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भी रह चुके हैं।

सी. मंजुनाथ अपनी पढ़ाई के बारे में बताते हुए कहते हैं, मेरे मित्रों ने जब पीएच. डी. कर ली, तो मेरे मन में भी इच्छा प्रबल हो गई कि मैं भी पीएच. डी. करूँ। लेकिन मेरे पास संसाधन का अभाव था, उन लोगों की तरह मैं आसानी से कोई विषय नहीं चुन सकता था। अभाविप में छात्रजीवन से सक्रिय रहने के कारण मैंने राजनीतिशास्त्र में इस विषय को चुना और डॉ. दयानन्द माने सर के निर्देशन में पीएच. डी. पूरी की। शोध-कार्य के दौरान विद्यार्थी परिषद् का काफ़ी सहयोग मिला। ख़ासकर अभाविप के कार्यकर्ता राजेश, सुरेश एवं नवयासरी ने लिखने और ड्राफ्टिंग करने में काफ़ी मदद की।

आज जब सारी सुख-सुविधाएँ मौजूद होने के बावजूद छात्र अपने कॅरियर की चिन्ता में अवसादग्रस्त हो जाते हैं, ऐसे समय में दिव्यांग छात्र मंजुनाथ उन छात्रों के लिए एक प्रेरणा के रूप में उभरकर सामने आए हैं।

परिवर्चा

नोटबंदी...

राष्ट्रहित में लिया गया फ़ैसला या जनता के साथ धोखा...??

नोटबंदी का फैसला भारत देश में कोई पहली बार नहीं हो रहा है। इससे पहले भी देश में नोट बंद हुए थे, पहले भी सरकारों ने तत्कालीन स्थिति को देखते हुए कुछ मुद्रा का प्रचलन बंद किया था। परंतु इस बार वजह कुछ और है। इस बार नोटबंदी का फैसला कालेधन, भ्रष्टाचार और आतंकवाद के खिलाफ लिए गए अब तक के सबसे बड़े फैसलों में से एक है। देश में 500 रुपये और 1000 रुपये के प्रचलित नोटों को बंद कर उनके स्थान पर 500 रुपये और 2000 रुपये के नये नोट जारी करने का एलान किया गया। इस बहूद्देशीय फैसले से जहाँ एक ओर कालेधन के जमाखोरों पर शिकंजा कसेगा वही दूसरी ओर इससे आतंकवाद और भ्रष्टाचार की कमर भी टूटेगी। नोटबंदी के फैसले पर आखिर क्या है युवाओं की राय, '**राष्ट्रीय छात्रशक्ति**' के संवाददाता **उत्कर्ष श्रीवास्तव** ने देशभर के छात्र-छात्राओं से नोटबंदी के विषय पर चर्चा की और केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए इस कदम पर उनकी राय जानी।

नोटबंदी भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में पतन के विरुद्ध व्यवस्था का एक दूसरा नाम, एक दूरदर्शी आयाम है। तमाम पूर्वानुमानित अटकलों और कयासों के बावजूद यह निर्णय अर्थव्यवस्था नियोजन में कारगर होगा। यह एक चिकित्सकीय समाधान है कुछ विशेष रोगों से निज़ात पाने का। हमारे यहाँ कालाधन, नकली नोट और इससे सम्बद्ध कई प्रचलनों से अर्थव्यवस्था को भारी क्षति होती आ रही है। इस परिस्थिति में नोटबंदी एक सर्जरी की तरह है जिसमें आरम्भ में कुछ कष्ट और दर्द का सामना करना पड़ता ही है।

–ज्योति कुमार रमैया

एलएल. बी. छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रधानमंत्री द्वारा लिए गए नोटबंदी के फैसले से जनता पर काफी गहरा असर हुआ है। हालांकि इस फ़ैसले से आम आदमी का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है, परंतु जिन समस्याओं से जनता पिछले कई सालों से लड़ रही, उन समस्याओं के निदान हेतु दो महीनों की लड़ाई और सही। कैशलेस इकॉनमी की कल्पना को साकार रूप देने के लिए नोटबंदी को जनता के सामने एक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। देश को भ्रष्टाचारमुक्त बनाने के लिए हुआ यह फैसला बिलकुल सही है और यही वजह है की जनता ने खुलकर इस फैसले का समर्थन किया। सरकार के इस फैसले से आम जनता, नेता, अफसर, उद्योगपति– सभी परेशान हैं। बस फर्क इतना है की आम आदमी कतारों में खडे होकर अपने पैसे बदलवा रहा है और भ्रष्टाचारी अपने कालेधन को सफेद करने का जुगाड़ कर रहे हैं।

–रविकांत श्रीवास्तव

बीटीसी छात्र, सुधाकर सिंह शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, जौनपुर

नोट बंद करने के बाद मीडिया ने देश का माहौल जैसा दिखाया है, वास्तविक स्थिति उससे काफ़ी अलग है। हम लोग इस फैसले से खुश हैं और सरकार के साथ है। नोट बंद होने के बाद कुछ लोग एटीएम और बैंकों में भीड़ होने के डर से नहीं जाना चाह रहे थे। लेकिन अब लोग कतार में लग रहे हैं और उन्हें पैसे भी अब आराम से मिल रहे हैं। जब कोई घर से बाहर निकलेगा ही नहीं और टेलीविजन में भीड़ देखकर बैठा रहेगा तो उसके साथ समस्याएँ आएँगी ही। युवावर्ग को भी इस फ़ैसले से बहुत कुछ सीखने को मिला है। पहले वे पैसे का काफ़ी दुरुपयोग करते थे, अब सोच-समझकर ज़रूरत के हिसाब से खर्च कर रहे हैं।

–श्रुति दत्त

एम.बी.ए. छात्रा, आई.आई.एल.एम. कॉलेज़, ग्रेटर नोएडा

विमुद्रीकरण (नोटबंदी) के सरकार के इस फ़ैसले को सीधे शब्दों में देखें तो ये कहना गलत नहीं होगा की निश्चित तौर पर यह बहुत ही अच्छा फैसला था, लेकिन इसको लागू करने का तरीका सही नहीं था। अगर हम मान लें कि देश में एक करोड़ लोगों के पास काला धन है, तो भी ये पूरे देश की जनसंख्या का महज 0.8% है। यानि महज 0.8% लोगों पर शिकंजा कसने के लिए हमने 99.2% लोगों को बेवज़ह परेशान किया। नोटबंदी से हो रही दिक्कतों से सभी लोग भली-भाँति परिचित हो चुके हैं। यह सरकार का नैतिक कर्तव्य बनता था कि देश की निर्दोष बाहुल्य जनता को कोई तकलीफ़ न हो। सुनहरे भारत के सपने को साकार करने में पूरा देश सरकार के साथ है, पर ये कदम त्रुटिरहित हों, बिना किसी असुविधा के हों, पारदर्शी हों, और सरकार को उसका लक्ष्य हासिल हो– यह सुनिश्चित करना सरकार का कर्तव्य है।

–अंकित यादव

एम.बी.बी.एस. छात्र, उत्तरप्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, सैफई, इटावा (उप्र)

नोटों का विमुद्रीकरण बहुत ही अच्छा और साहसिक कदम है, लेकिन पूरी तैयारी नहीं की गयी। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय से जनता को काफ़ी परेशानी उठानी पड़ रही है। केवल जनधन खातों की वजह से ही काला धन सफेद नहीं हो रहा, बल्कि देशभर में बने धार्मिक संस्थानों से, ट्रस्ट के नाम पर बड़े पैमाने पर काले धन को सफेद किया जा रहा है। 2000 का नोट चलने से कालाधन कुछ दिनों में और बड़ी राशि के रूप में इकट्ठा हो जाएगा, इसलिए 2000 के नोट को शीघ्र बंद कर देना चाहिए।

–सचिन जोशी

बी.एससी. छात्र, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

प्रधानमंत्री द्वारा लिए गए नोटबंदी के फैसले को जनता ने स्वीकार किया, परंतु सही ढंग से व्यवस्था न होने से जनता को काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ए.टी.एम. मशीनों में तथा बैंकों में पर्याप्त मात्रा में कैश न होने के कारण जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। कुछ जगह कतार में लगे लोगों पर पुलिस द्वारा लाठियाँ भी बरसाई गयीं। जिनके पास कालाधन है, वे कहीं भी कतार में खड़े नहीं दिखाई दे रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जो लोग अनपढ़ हैं, जो बैंकों की सुविधाओं से अनभिज्ञ हैं, ऐसे लोग नोटबन्दी से सर्वाधिक प्रभावित हैं। शादी-विवाह से लेकर व्यापारियों, नौकरीपेशा लोगों को भी काफ़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

–नवनीत,

स्वच्छता निरीक्षक छात्र,

ऑल इण्डिया इस्टिट्यूट ऑफ लोकल सेल्फ गवर्नमेंट कॉलेज़, मुम्बई

"अभाविप का इतिहास गौरवशाली" : विनय बिदरे

खुले अधिवेशन में नेताओं ने राष्ट्रनिर्माण में युवाओं को आगे आने का किया आह्वान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने सदैव भारत मातृभूमि की आराधना की है। युवाओं में राष्ट्रभक्ति का संचार करने लिए के लिए जन ऊर्जा को खड़ा करने का काम किया है। देश की एकता, अखण्डता को बनाए रखने के लिए अभाविप ने पूरी ताकत से देशविरोधी तत्त्वों का सामना किया है। आज देश में कुछ राजनीतिक दल, देश से पहले दल, धर्म और विचारधारा को मानते हैं, आवश्यकता इस बात की है कि हम देश को पहले रखें। स्वाभिमानी और सशक्त भारत बनाने के लिए सभी को, खासकर युवाओं को आगे आना होगा। अभाविप का इतिहास गौरवशाली है इसके 40 से ज्यादा कार्यकर्ता देश के सम्मान के लिए शहीद हुए हैं। ये बातें विद्यार्थी परिषद् के खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे ने कही।

खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए उस्मानिया विश्वविद्यालय की छात्र नेत्री शहजादी ने कहा कि यह धरती पुण्यभूमि है, जहाँ नारी की पूजा की जाती है। उन्होंने कहा कि कुछ नेता कहते हैं कि 'भारतमाता की जय' बोलना इस्लाम में हराम है, जबकि इस्लाम में ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं भी मुस्लिम छात्रा हूँ, लेकिन मुझे 'भारतमाता की जय' बोलने में कोई परेशानी नहीं है।

इस मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री निखिल रंजन ने कहा कि लम्बी गुलामी के बावजूद भी भारत आज उन्नत है। इसका कारण यहाँ कि संस्कृति जीवन लक्ष्य और सामाजिक समरसता है। सामाजिक समरसता भारतमाता का श्रृंगार है। कुछ लोग हमारी सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने की कोशिश में लगे हुए हैं। लेकिन विद्यार्थी परिषद् के रहते उनका यह सपना कभी साकार नहीं होगा। यदि भारत को सशक्त बनाना है तो सामाजिक समरसता का विस्तार करना पड़ेगा।

वहीं राष्ट्रीय मंत्री किशोर बर्मन ने कहा कि वामपंथी हमारे देश की परिवार-व्यवस्था को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। माओवादी संगठन, मुस्लिम तुष्टीकरण और इस्लामिक आतंकवाद देश को खोखला करने का काम कर रहा है। हमें इससे सचेत रहना होगा।

राष्ट्रीय मंत्री संजय कुशराम ने कहा कि जनजाति समाज संस्कृति के रक्षक हैं। जिन्हें हम अनपढ़ व अशिक्षित मानते हैं, वे प्रकृति के सबसे बड़े संरक्षक हैं, प्रकृति की पूजा करते हैं। जनजाति समाज में कभी दहेज के नाम पर महिलाओं को मारा नहीं जाता है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रोहित मिश्र ने कहा कि जो लोग राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लगे हैं, उन्हें यहाँ की संस्कृति को समझाना होगा, जिससे वह भारत की गौरवगाथा और भारतीयता को जान सकें।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ की उपाध्यक्षा प्रियंका छाबड़ी ने कहा कि अभाविप शिक्षा के साथ संस्कार प्रदान करती है। हमने दिल्ली विश्वविद्यालय में कमज़ोर छात्रों की मदद के लिए नेकी की दीवार का निर्माण किया है। सामाजिक समरसता के लिए सोशल इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू किया है। प्रियंका के अलावा अन्य छात्र-नेताओं ने भी अधिवेशन को संबोधित किया। मंच का संचालन मध्य भारत प्रांत मंत्री रोहिन राय ने किया। ■

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव क्र. 2

राष्ट्रीय परिदृश्य

भारत अनेक सकारात्मक परिवर्तनों के माध्यम से विकास पथ पर बढ़ते हुए विश्व में सशक्त राष्ट्र के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने की ओर अग्रसर है। भारतीय सेना द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक व केन्द्र सरकार द्वारा विमुद्रीकरण के निर्णय से सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वाभिमान व सम्मान का भाव जागृत हुआ है। अभाविप अपने राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान इन कदमों के लिए सेना एवं केन्द्र सरकार का अभिनन्दन करती है, साथ ही अभाविप विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित करनेवाले भारतीय वैज्ञानिकों, खेल जगत् में उत्कृष्ट स्थान हासिल कर देश का मान बढ़ानेवाले खिलाड़ियों एवं स्वदेशी का भाव लेकर कार्य कर रहे युवाओं का अभिनन्दन करती है।

केन्द्र सरकार द्वारा लिया गया विमुद्रिकरण का निर्णय देश में भ्रष्टाचार-निर्मूलन व आर्थिक सुधार की दिशा में उठाया गया साहसिक व दूरगामी कदम है। देश में कुछ तत्त्वों द्वारा निजी स्वार्थ के लिए सरकार के इस निर्णय को अप्रभावी बनाने हेतु कुत्सित प्रयास किए जा रहे हैं। अभाविप ऐसे तत्त्वों पर कठोर कार्यवाही की मांग करती है तथा इस निर्णय के विरुद्ध गलत तरीके से नोट बदल करनेवालों पर अब तक की गई कार्यवाही की सराहना करती है। इस पूरे प्रकरण ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय जनमानस देश व समाजहित में लिए गए हर निर्णयों के साथ सदैव समर्थन को तैयार है। अभाविप केन्द्र सरकार से मांग करती है कि ग्रामीण क्षेत्र में डिजिटीलीकरण का प्रबोधन होना चाहिए।

देश में विघटनकारी तत्त्व अपने कुत्सित प्रयासों द्वारा राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं सम्प्रभुता को क्षति पहुँचाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। पंजाब में खालिस्तान-समर्पित आतंकियों का पुनः उठना, केरल व कर्नाटक समेत कई राज्यों में राष्ट्रवादी विचारधारा के लिए कार्य करनेवाले लोगों पर वामपंथियों और जिहादियों द्वारा प्राणाघातक हमला करना देश के लिए चिंता का विषय है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जाधवपुर विश्वविद्यालय, एनआईटी श्रीनगर एवं एमेनेस्टी इण्टरनेशनल-जैसी संस्थाओं के कार्यक्रमों में जिस प्रकार देश की अखण्डता के विरुद्ध नारे लगाए गए, बिहार व बंगाल में कई स्थानों पर पाकिस्तान समर्थित नारेबाजी लगाना व कुछ मीडिया चैनलों मे आतंकियों के महिमामण्डन की अभाविप निंदा करती है और साथ ही जिस तरह से अभाविप-कार्यकर्ता ने उसका विरोध किया, उसकी सराहना करती है। हाल ही में इण्डियन मुजाहिद्दीन के सह-संस्थापक यासिन भटकल व उसके 4 साथियों को एनआईए की विशेष अदालत द्वारा फाँसी की सजा दिया जाना, मध्य प्रदेश में पुलिस-मुठभेड़ में सिमी-आतंकियों के मारे जाने व छत्तीसगढ़ में सुरक्षा-बल द्वारा नक्सलियों के मारे जाने से आतंकियों का मनोबल गिरा है।

सीमा पर पकिस्तानी सेना द्वारा गोलीबारी से हताहत भारतीय सेना के जवानों तथा मणिपुर के आतंकी हमले में शहीद हुए जवानों के प्रति अभाविप गहरी संवेदना व्यक्त करती है। जम्मू कश्मीर में सेना पर लगातार पत्थरबाजी की घटना ने सम्पूर्ण देश को आक्रोशित कर दिया है। सेना द्वारा आत्मरक्षार्थ उपयोग किए जानेवाले पेलेट गन पर रोक लगाने की मांग करनेवालों की अभाविप तीव्र भर्त्सना करती है। अभाविप केन्द्र सरकार से मांग करती है जम्मू कश्मीर के अलगाववादी नेताओं को मिलनेवाली सरकारी सुविधाओं पर अविलंब रोक लगाये एवं तथाकथित मानवाधिकार की वकालत करनेवालों की जांच करवाकर दण्डित करे।

पश्चिम बंग सरकार द्वारा वोटबैंक व तुष्टिकरण की नीति के तहत दुर्गा पूजा-जैसे आस्था के पर्व पर अनावश्यक विवाद पैदा करना एवं उत्तराखण्ड में सरकार द्वारा शुक्रवार को 90 मिनट की छुट्टी के प्रावधान ने साम्प्रदायिक तत्त्वों के मनोबल को बढ़ाने का काम किया है। पश्चिम बंग में नवीं दिवस पर वीरभूम के मल्लारपुर, हावड़ा के धुलागढ़ व वर्धमान के कटवा सहित अन्य क्षेत्रों में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा पर राज्य सरकार की चुप्पी आश्चर्यजनक है। आज पुनः लोगों के घरों, दुकानों व धार्मिक स्थलों पर सम्प्रदाय विशेष द्वारा हमला कर 1950 से 1970 तक घटी घटनाओं की पुनरावृत्ति दिख रही है। आज फिर हिंदू समुदाय पैतृक घर व सम्पत्ति छोड़कर पलायन कर रहा है। पश्चिम बंग में क़ानून-व्यवस्था की स्थिति अत्यंत भयावह बन गई है। अभाविप का यह 62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन केन्द्र सरकार से अविलंब हस्तक्षेप व राज्य सरकार से कठोर कदम उठाकर हिंदुओं का पलायन रोकने एवं जान-माल की सुरक्षा की मांग करता है।

भारत एक युवा शक्ति सम्पन्न देश है, लेकिन दुर्भाग्यवश

विदेशी शक्तियों द्वारा नशे की खेप भारत के सीमावर्ती राज्यों में भेजकर युवाओं को नशे की लत में ढकेला जा रहा है। राजस्थान में नवम्बर में 10 हजार करोड़ के ड्रग का पकड़ा जाना, एम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान द्वारा 7500 करोड़ रुपये का नशा प्रतिवर्ष पंजाब भेजना एक बड़े षड्यंत्र का संकेत कर रही है। अभाविप इस पर सख्त नियंत्रण एवं नशा-प्रभावित युवाओं के समुचित पुनर्वास की मांग करती है।

देश समकाल में बाल व महिला तस्करी की विभीषिका का दंश झेल रहा है। मासूम बच्चों का अपहरण कर उनको भिक्षावृत्ति एवं वेश्यावृत्ति के नर्क में ढकेलने का अपराध बड़े पैमाने पर संचालित हो रहा है। वर्ष 2014 में प्रकाशित एक आँकड़े के अनुसार 3,27,568 बच्चे गायब हैं। हाल ही में पश्चिम बंग में दिल दहलानेवाली एक घटना ने सम्पूर्ण मानवता को शर्मसार कर दिया। कोलकाता और उसके आसपास सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से अपहरण कर लाई गई कम उम्र की लड़कियों को इंजेक्शन देकर उनसे बच्चा पैदा करवाकर बाल तस्करी करवाई जा रही है। यह एक अत्यंत सोचनीय विषय है। अभाविप का मानना है केवल सरकार एवं पुलिस द्वारा ही इस समस्या का निदान संभव नहीं है, इस लड़ाई को सम्पूर्ण समाज को लड़ना पड़ेगा। मणिपुर में जल्द-से-जल्द बंदी हटाई जाए एवं शान्ति स्थापित हो।

देश में बढ़ रही रेल-दुर्घटनाएँ दुःखद हैं। कानपुर के समीप हुए भीषण रेल हादसे में हताहत हुए सैकड़ों लोगों के प्रति अभाविप श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। अभाविप केन्द्र सरकार से मांग करती है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए रेल-परिचालन व परिगमन-व्यवस्था में आधारभूत सुधार अविलंब लाया जाए।

भारत के कई राज्यों में रहनेवाले शरणार्थियों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार द्वारा भारतीय नागरिकता क़ानून में संशोधन द्वारा जो बिल लाया गया है, उसके अंतर्गत पाकिस्तान, अफगानिस्तान व बांग्लादेश में रहनेवाले अल्पसंख्यक (हिंदू, सिक्ख, जैन, बौद्ध, ईसाई व पारसी) को नागरिकता प्रदान करनेवाले विधेयक का अभाविप स्वागत करती है।

अभाविप का मानना है कि कृषि-प्रधान देश होने के नाते किसानों कि स्थिति व कृषि में सुधार लाना अत्यंत ही आवश्यक है। कृषि-प्रौद्योगिकी व आधुनिक तकनीक से किसानों को जोड़ने हेतु प्रभावी कदम व ठोस कार्य-योजना धरातल पर क्रियान्वयन करना, लागत के साथ उत्पादन की समुचित क़ीमत, फसलों के भण्डारण की पर्याप्त व्यस्वस्था से किसानों एवं कृषि की हालत में सुधार लाया जा सकता है। अभाविप केन्द्रीय सरकार से कृषि आयोग के गठन की मांग करती है।

भारत की प्रगति एवं समृद्धि में बढ़ते प्रभावी कदमों से देशविरोधी ताक़तें व विरोधी घबराकर संसद ठप्प कर सरकार की अच्छी नीतियों का विरोध कर रहे हैं। इसलिए अभाविप 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन में युवाओं व सामाजिक संगठनों से आह्वान करती है कि देश में सामाजिक सौहार्द बनाने में अहम भूमिका निभाकर भारत को विकास पथ पर विश्व पटल पर ऊपर ले जाए।

"19 जनवरी कश्मीरी हिंदुओं के लिए है काला दिन" : ललित पाण्डेय

विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं को लेकर विद्यार्थी परिषद् ने जेएनयू में लगाई प्रदर्शनी

कश्मीरी हिंदुओं के विस्थापन व उन पर हुए अत्याचारों को लेकर अभाविप जेएनयू द्वारा साबरमती मैदान में 'विस्थापन दिवस' (19 जनवरी) के अवसर पर प्रदर्शनी लगाई गयी। इस अवसर पर जेएनयू एबीवीपी के अध्यक्ष ललित पाण्डेय ने कहा कि 19 जनवरी की रात कश्मीरी हिंदुओं के लिए निराशा और अवसादभरी रात है। इसी दिन काश्मीर से लाखों लोग अपनी धरती से दूर हो गए। 7,50,000 लोगों का काश्मीर से पलायन हो गया, लाखों बेघर हो गए, 6000 कश्मीरी हिंदुओं को मारा गया, 1500 से अधिक मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया गया। 600 कश्मीरियों के गाँवों को इस्लामी नाम दे दिया गया। आख़िर क्या अपने ही देश में 26 साल से शरणार्थी बनकर रहना जायज है? इस अवसर पर अभाविप जेएनयू सचिव निकुंज मकवाणा ने कहा कि कश्मीर से स्थानीय अलगाववादियों और आतंकवादियों द्वारा कश्मीरी हिंदुओं का निर्मूलन आज बहुत बड़ी समस्या है। अभाविप विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं की आवाज़ बनकर सभी छात्रों को जागरूक करेगी।

ज्ञात हो कि जेएनयू अभाविप, स्वामी विवेकानन्द की 154वीं जयन्ती 12 जनवरी (राष्ट्रीय युवा दिवस) से लेकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 120वीं जयन्ती 23 जनवरी तक अभाविप जेएनयू में युवा पखवाड़ा के रूप में मना रही है। इसमें परिषद् पतंग महोत्सव, भारत एक अभियान कश्मीर की ओर, वृक्षारोपण, पुस्तक-प्रदर्शनी, भारत जागो मैराथन दौड़ और स्वच्छता अभियान-जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कर दो महापुरुषों के जीवन-वृत्त को केन्द्रित किया जायेगा।

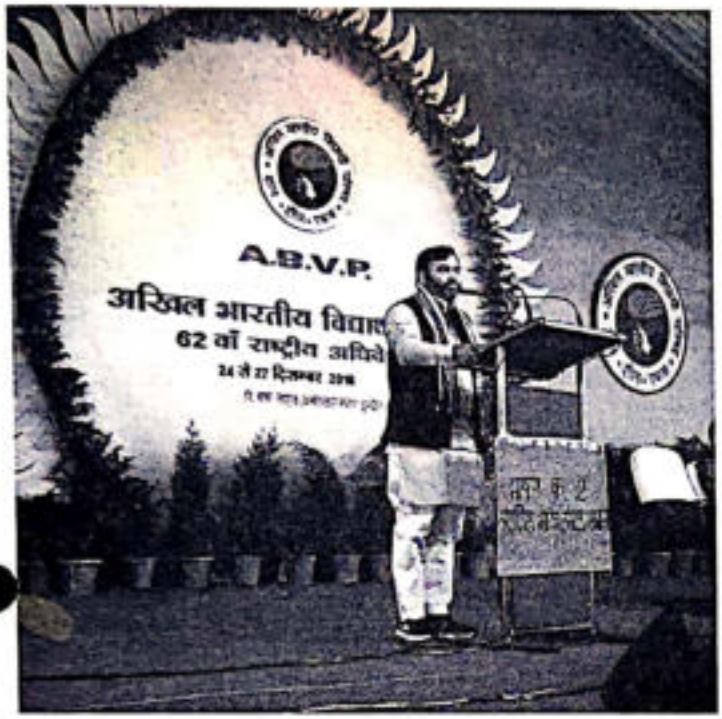

"समरसता से ही सुरक्षित होगा भारत" : श्रीनिवास

राष्ट्रीय अधिवेशन में 'सुरक्षित भारत-समरस भारत' विषय पर अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने रखे विचार

अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कि समरसता और सुरक्षा अलग-अलग नहीं है। जब-जब भारत में समरसता कम हुई, तब आंतरिक और बाह्य शत्रु बढ़े हैं और देश ने संकट का सामना किया है। वास्तव में समरसता ही सुरक्षित भारत की गारंटी है। समाज में समरसता को पुनर्स्थापित कर भारत को समृद्ध और सुरक्षित बनाया जा सकता है। राष्ट्रीय अधिवेशन के तीसरे दिन **'सुरक्षित भारत-समरस भारत'** विषय पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत में अंग्रेज़ जब आए तब समरसता का भाव था, सौहार्द था। पहली बार अंग्रेज़ों ने बाँटने का प्रयास किया समाज ने भी ग़लती की, हम छद्म दुश्मन को पहचान नहीं पाए। वर्ष 1927 के महाराष्ट्र के एक प्रकरण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर ने एक तालाब से पानी लेने को लेकर न्यायालय में प्रकरण दायर किया था, अंग्रेज़ों ने इस प्रकरण को जान-बूझकर दस साल तक लटकाकर रखा और बाद में कहा कि सबको पानी मिलना चाहिए।

आतंकवाद का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अमेरिका एक आंतकी हमले के बाद ही हिल गया, लेकिन भारत की सेना और पुलिस लगातार आतंकी हमले झेल रही है, उनको निष्फल कर रही है। देश में कुछ लोग ऐसे हैं, जो सेना और पुलिस के कार्रवाई करने पर मोमबत्ती लेकर सामने आ जाते हैं। देश को तोड़ने के बहुत षड्यंत्र हुए, लेकिन सफल नहीं हुए।

आंतरिक और बाह्य सुरक्षा पर बोलते हुए श्रीनिवास ने कहा कि भारत के पड़ोसी बाह्य सुरक्षा को लेकर चुनौती पैदा करते हैं। सीमाओं को सुरक्षा के लिए सैन्य बल है, लेकिन देश में आतंरिक सेना बननी चाहिए। जिस देश की आतंरिक सेना कमज़ोर होती है, उस देश की सुरक्षा ख़तरे में आती है। भारत अंग्रेज़ों का गुलाम इसलिए बना, क्योंकि हमारे यहाँ उस समय आतंरिक शक्ति कमज़ोर हो गई थी। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे सेना में भर्ती हों और न हो पाएँ तो कम-से-कम देश की आतंरिक सेना का हिस्सा बनें। हमारे देश में अनेक प्रकार की देशविरोधी एजेंसियाँ काम कर रही हैं, उनके षड्यंत्र को भी समझना ज़रूरी है।

निर्माण और समरसता भारत को मज़बूत बनाएगी। साथ ही ऊर्जा और खाद्यान्न-सुरक्षा, रोटी, कपड़ा, मकान, स्थायी विकास, लैंगिक न्याय और भारतीय मूल्यों के लिए भी हमें कार्य करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि युवा समाधान का मार्ग हो सकता है, समस्या नहीं। संगठन को सर्वस्पर्शी बनाने के लिए काम होने चाहिए। वहीं, इस प्रकार के राजनीतिक दलों को निषेध करने की आवश्यकता है, जो हमारे सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करते हैं। ■

सार्वकालिक है छात्र आन्दोलन की प्रासंगिकता

डॉ. रजनीश कुमार शुक्ल

जो समाज यथास्थितिवादी नहीं है, सपने देखता है और सपनों को सच करने के लिये प्रयास करता है, उस समाज में छात्र-युवा आन्दोलन अपरिहार्य है। भारत का समाज स्वाभाविक रूप में ऐसा ही है। भारत की प्रगति, समृद्धि तथा विश्वविजय की ओर बढ़ रही अप्रतिहत गति युवा गतिशीलता का ही परिणाम है। इस गतिशील विकास को समझने के लिये नब्बे के दशक के बाद की सामाजिक अभिवृत्ति को विश्लेषित करने एवं मूल्यांकित करने की आवश्यकता है। छात्र-आन्दोलन को समाप्त करने तथा छात्र-सक्रियता को स्तम्भित करने के कारण भारत में किस प्रकार की समस्याएँ आई हैं, इसका भी विवेचन आवश्यक है।

यदि भारतीय सन्दर्भों में छात्र-सक्रियता का मूल्याकंन तथा उसकी प्रासंगिकता का विचार सही सन्दर्भों में करना है तो इसे मात्र सत्ता-परिवर्तन के राजनीतिक साधन के रूप में देखने की सामान्य प्रवृत्ति से अलग सोचने की आवश्यकता भी है; क्योंकि सत्ता-परिवर्तन और राजसत्ता दख़ल के आन्दोलन वास्तविक छात्र युवा आन्दोलन नहीं हैं, अपितु यह राजनीतिज्ञों के द्वारा अपने दलीय हितों को लेकर किया जानेवाला उपक्रम मात्र है। अतः उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह द्वारा अथवा देश में राहुल गाँधी द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों को छात्र-युवा आन्दोलन के पर्याय के रूप में देखना स्थिति का वास्तविक दर्शन नहीं है। इसका निहितार्थ तो छात्र-युवा आन्दोलन को अप्रासंगिक सिद्ध करना ही है।

इसी प्रकार युवा आन्दोलन के दिन बीत गये– इस प्रकार की भविष्यवाणी करनेवाले लोग 1990 के बाद के उदारीकरण तथा तज्जन्य उपभोक्तावाद के अधिवक्ता एवं सृजनात्मक कल्पना से शून्य लोग हैं। उनके द्वारा परोसे जा रहे तथ्य इस देश के युवा मन का यथार्थ नहीं है। इसलिये यह आवश्यक है कि भारत के युवा का सच सामने आना चाहिये। उसे प्रचारित-प्रसारित करने का बहुशः यत्न भी होना चाहिये। किन्तु भारतीय युवा का समकालीन रूप बाज़ार के विस्तार में सहायक नहीं है, अतः इसको बाज़ार-केन्द्रित विचार-सरणि में स्थान नहीं प्राप्त हो सकता है। इन सब के होते हुए यह भी सच है कि समकालीन समाज का नियन्त्रण बाज़ार द्वारा हो रहा है न कि समाज में अनुकरण योग्य आदर्श प्रस्तुत कर सकने की क्षमता रखनेवाले श्रेष्ठ जनों के द्वारा।

आज आवश्यकता है कि स्वातन्त्र्योत्तर भारत में छात्र-युवा आन्दोलन के महत्त्व तथा उसकी प्रभावकारी भूमिका का स्मरण किया जाय तथा 1990 के बाद की छात्र-युवा गतिविधियों का समुचित मूल्यांकन हो। इसके बिना भारत में छात्र-आन्दोलन की प्रासंगिकता का निषेध उचित नहीं है। सत्य तो यह है कि स्वतन्त्रताप्राप्ति से अब तक का समकालीन इतिहास समर्थ, सशक्त और वैभवशाली भारत के निर्माण में अपना श्रेष्ठतम योगदान करनेवाले छात्र-आन्दोलन का ही इतिहास है। याद करें स्वतन्त्रता के बाद जब देश के संविधान-निर्माण पर सामाजिक जीवन में चुप्पी थी, सन्नाटा पसरा हुआ था। संविधान सभा के बाहर देश की जनता को उसके स्वरूप तथा रचना के संबंध में बतानेवाला कोई न था।

तब इस देश के युवाओं ने रचनात्मक संघर्ष का व्रत लिया और भारतीयकरण के लिए एक छात्र आन्दोलन खड़ा हुआ। 1962 में चीनी आक्रमण के बाद पूर्वोत्तर की सीमा के मानवीय प्रश्न, जिसे नक्शों और ग्रन्थों के आधार पर सुलझाया जाना संभव न था, उसके लिये हृदय से संवाद करनेवाले मानवीय संवेदना से युक्त प्रयासों की आवश्यकता थी। यह स्थिति राष्ट्रीय परिदृश्य में चुप्पी बन गयी थी। इस मौन को तोडने के लिए पूर्वोत्तर के लोगों से मिलकर हृदयपूर्वक संवाद स्थापित करने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने जब 'अन्तर राज्य छात्र जीवन दर्शन' नामक प्रकल्प की शुरूआत की, तो यह भारतीय इतिहास में अनूठी घटना थी। यह रचनात्मक छात्र आन्दोलन की अनोखी पहल थी, इसने देश के उपेक्षित भूभाग के लोगों से हृदय से संवाद तथा समस्त भारत के साथ पूर्वोत्तर के युवाओं के समरस संवाद का जो वितान प्रस्तुत किया है, वह किसी भी शासकीय प्रयास से संभव न था। यह सब युवा-रचनाधर्मिता से ही संभव था और उसने कर दिखाया। 1974 का छात्र आन्दोलन किस प्रकार दूसरी आज़ादी का आन्दोलन बना और लोकतन्त्र की समाप्ति के षड्यन्त्र को अपने अदम्य पराक्रम से नेस्तनाबूद कर छात्र शक्ति ने सामजिक दण्ड शक्ति की अपनी भूमिका को जिस यशस्विता के साथ सिद्ध किया, वह इतिहास का विषय है। उस पर इतना कुछ लिखा जा चुका है कि अब बहुत कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

इस आलेख में मैं इस पर केन्द्रित हूँ कि वर्ष 1977 के बाद भी छात्र आन्दोलन मरा नहीं है, अप्रासंगिक नहीं हुआ है। कश्मीर की समस्या आज पूरे देश मे अपने वास्तविक एवं यथार्थ रूप में जानी जा रही है तो यह देश के युवाओं के द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में चलाए गए आन्दोलन का ही परिणाम है। असम सहित समूचे भारत में घुसपैठ यदि केन्द्रीय समस्या बना है, लोगों की चिन्ता इस बात को लेकर घनीभूत हुई है तो इसका श्रेय परिषद् के नेतृत्व में पले छात्र-आन्दोलन को ही है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध 1986-90 का संघर्ष हो अथवा कश्मीर की समस्या– छात्र-सक्रियता का ही परिणाम था कि इस पर समस्त समाज गंभीर हुआ। नब्बे के बाद अर्थात् वैश्विकता की कथित आँधी और उदारीकरण के व्यापारिक उपक्रम के साथ ही यह बात ज़ोर-शोर से कही जाने लगी कि छात्र आन्दोलन के दिन लद गये। शायद इसलिए कि छात्र आन्दोलन को पारिभाषित करनेवाले इसे सत्ता-परिवर्तन का माध्यम मानते है। चूंकि व्यापारीकरण बाज़ारीकरण के वैश्विक प्रयास में सरकारों की प्रासंगिकता ही समाप्त हो गयी। इसलिए छात्र-आन्दोलन की भी निरर्थकता सिद्ध हो गई है। किन्तु यह योजनबद्ध विभ्रम का निर्माणमात्र था। समस्त विश्व, विशेषतः भारत में छात्र आन्दोलन सत्ता-परिवर्तन का साधन नहीं रहा है। सत्ता-परिवर्तन आन्दोलन का साधन अवश्य रहा है। वस्तुतः आन्दोलन तो हमेशा राष्ट्रीय सन्दर्भों में ही खड़े हुए, किन्तु सत्ता-परिवर्तन के पड़ाव पर आते-आते उन आन्दोलनों ने दम तोड़ दिया। इसलिए राजनीति द्वारा व्यर्थ एवं अप्रासंगिक कहे जाने लगे।

1990 से 2000 के बीच के दस वर्ष तो इस देश में छात्र आन्दोलन के लिए अत्यन्त खराब रहे हैं क्योंकि वैश्विक व्यापारवाद के समर्थकों ने छात्र-सक्रियता के खिलाफ बौद्धिक मुहिम चलाई और उसे सर्वथा अप्रासंगिक सिद्ध कर दिया। इस कालखण्ड में विखण्डनवाद, व्यक्तिवाद, वैयक्तिक निजता आदि जाने कितने प्रकार के सिद्धान्त गढ़े गए और उन तर्कों के आधार पर सामूहिक सक्रियता की निस्सारता सिद्ध की जाने लगी। जिसका परिणाम हुआ कि राजसत्ता ने छात्रों की सक्रियता के सभी मंचों को प्रतिबन्धित करना, उपेक्षित करना प्रारंभ कर दिया। इसका निशाना छात्र संघ बने।

इस प्रयास ने दोधारी तलवार का काम किया। एक तरफ तो यह सिद्ध किया कि छात्र आन्दोलन का अर्थ मात्र छात्र संघ एवं राजनीति है दूसरी ओर छात्रों को हिंसावादी एवं अराजक सिद्ध करने में भी सफलता मिली। किन्तु यह भारतीय युवा का यथार्थ नहीं है। मूलतः भारत का छात्र युवा न तो खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ की अवधारणावाला है, न ही वह इसको अपने जीवन का यथार्थ मानता है। हाँ, इन समस्त प्रयासों का परिणाम यह अवश्य रहा है कि भारतीय युवा में एक प्रकार का कैरियरिज़्म प्रभावी हुआ है। किन्तु इस प्रभाव के कुछ सुपरिणाम भी आये। इन परिणामों ने छात्रान्दोलन की प्रासंगिकता को पुनर्सिद्ध किया है।

आज भारत विश्वविजेता बनने की भूमिका में है तो यह इसी युवा शक्ति की मेधा का प्रतिफल है। आज समस्त विश्व भारत की

ओर आशाभरी निगाहों से देख रहा है तो युवा श्रम एवं कौशल के कारण से ही। वस्तुतः छात्र आन्दोलन की प्रासंगिकता को समूचे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में न देखकर मात्र राजनीति के कोष्ठक में देखनेवाले ही छात्र आन्दोलन को निष्प्रभावी एवं अप्रासंगिक कह सकते हैं। वस्तुतः सम्पूर्ण भारतीय परिदृश्य युवा शक्ति की गतिविधि से प्रभावित है। आन्दोलन का अर्थ ध्वंस नहीं अग्रगामी गति है। परिवर्तन की अग्रगामिता का निदर्श बना भारतीय युवा सभी मोर्चों पर भारत-विजय का सपना साकार कर रहा है। वह जीत रहा है और जीतेगा।

वास्तव में राष्ट्रीय विकास की गति के आलोक में युवा आन्दोलन को न देखने का कारण स्पष्ट है। इसे एक वर्ग शक्ति के रूप में स्थापित करना इस विधा में आसान है। इस पर एक ऐसा वर्ग जो कि अनुत्पादक है, एक ऐसा वर्ग, जिस पर मात्र व्यय ही होनेवाला है। 'कोढ़ में खाज' मुहावरों को सटीक बैठाता उदारीकरणजनित व्यापारीकरण, जिसमें उपभोक्ता-वस्तुओं के उत्पादन-खपत की संतृप्तता के कारण मन्दी ने घेर लिया था, को भी शिक्षा का बाज़ार प्राणवायु के रूप में दिखने लगा है। इन सबने छात्र समुदाय को एक तरह से निराशा ही दी है। परिसर में आर्थिक शोषण और परिसर के बाहर भविष्य का अन्धेरा– इन दोनों से संघर्ष करती छात्र शक्ति को अप्रासंगिक सिद्ध करना छात्र-युवा के साथ अन्याय है।

आख़िर किसी भी आपदा-विभीषिका के समय प्रथम स्वयंसेवी के रूप में अपने को प्रस्तुत करनेवाला युवा दिखता नहीं। भारत की रक्षा के लिए बलिवेदी पर चढ़नेवाला युवा विभ्रम पैदा करनेवालों को क्यों नहीं दिखता। भारत सहित समस्त विश्व में अपनी मेधा का लोहा मनवा रहा युवक क्यों नही सुर्खियाँ बनता है। आख़िर युवा आन्दोलन को किस रूप में पारिभाषित किया जायेगा। राष्ट्र के विकास में गतिशील योगदान कर रहा युवा, युवा आन्दोलन का ही प्रतिफल है। घुसपैठ, आतंकवाद, अशिक्षा के विरुद्ध लड़ रहा युवा-छात्र आन्दोलन ही है। मात्र सत्ता-परिवर्तन का साधन बनाने की कोशिश और उसमे असफल होने पर छात्र-युवा आन्दोलन को निरर्थक तथा अप्रासंगिक सिद्ध करनेवाले लोग युवा आन्दोलन के पर्याय से अपरिचित तथा विभ्रम के शिकार बुद्धिजीवी हैं। उनके लिए उनकी शर्तों पर युवा आन्दोलन का न चलना ही श्रेयस्कर है।

(लेखक अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं)

■

ममता सरकार की मनमानी, अभाविप को नहीं मिली रैली की अनुमति

सिलीगुड़ी(पश्चिम बंगाल)। पश्चिम बंगाल में ममता सरकार की मनमानी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, राज्य सरकार पुलिस प्रशासन को पार्टी कैडर की तरह काम में लगा रही है। यही वजह है कि पुलिस विरोधियों को कुचलने में लगी है। लोकतंत्र ख़तरे में है, पुलिस तृणमूल काँग्रेस के नेताओं के कहने पर काम कर रही है। ये बातें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के ज़िला प्रमुख दीपंकर चक्रवर्ती ने कहीं। चक्रवर्ती सिलीगुड़ी जर्नलिस्ट क्लब में आयोजित संवाददाता-सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 12 जनवरी को अभाविप ने स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती यानि राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने के लिए एक मशाल रैली निकालने की अनुमति पुलिस प्रशासन से मांगी थी। इसकी अनुमति नहीं मिली, रैली के पश्चात् हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं के ऊपर आइपीसी की धाराओं के तहत झूठे मुक़दमे दायर कर दिये गये।

उन्होंने कहा कि अभाविप 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के दिन एक तिरंगा यात्रा निकाल रही है। इसकी भी अनुमति अभी तक पुलिस प्रशासन ने नहीं दी है। हमारे आवेदन-पत्र को पुलिस ने लेना तक उचित नहीं समझा। विवश होकर 23 जनवरी की रैली को लेकर सिलीगुड़ी पुलिस कमिश्नर को रजिस्ट्री चिट्ठी दी गई है। श्री चक्रवर्ती ने कहा कि हम पुलिस-प्रशासन से व राज्य सरकार से जानना चाहते हैं कि आज हम किस पश्चिम बंगाल में रह रहे हैं, जहाँ स्वामी विवेकानन्द व नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती मनाने की अनुमति नहीं दी जाती है। इसके लिए देशभक्त छात्रों ऊपर झूठा मुक़दमा दर्ज़ किया जाता है। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य-सरकार जान-बूझकर बंगाल के छात्र-युवाओं को बंगाल के महापुरुषों का गौरवशाली इतिहास जानने से वंचित करना चाहती है। इसके लिए पुलिस का उपयोग ममता सरकार कर रही है।

नेपाल का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और भारत

नेपाल की वर्तमान राजनीतक परिदृश्य, सरकार बदलने के बाद भारत के साथ संबंध की स्थिति पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से खुलकर बात की प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री नारायण प्रसाद ढकाल ने। भारत के साथ नेपाल के सांस्कृतिक संबंध सहित प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद् की नेपाल में भूमिका पर भी उन्होंने अपने विचार रखे।

नारायण प्रसाद ढकाल बताते हैं कि भारत-नेपाल का संबंध सदियों पुराना है। भारत-नेपाल के बीच जो आत्मीय संबंध है, उसे आप दुनिया के किसी भी देश के बीच नहीं पायेंगे। भारत-नेपाल के लोगों के बीच न सीमाओं का बंधन है, न सांस्कृतिक बंधन। विश्व का ध्यान नेपाल पर है। चीन, यूरोपियन यूनियन सहित कई देशों व संगठन– हर कोई नेपाल में अपना धाक जमाना चाहता है। मधेश-आंदोलन क्यों हुआ, कैसे हुआ, यह एक विचारणीय प्रश्न है। मधेश आंदोलन का समाधान आसानी से किया जा सकता था, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हो पाया। इस आंदोलन के बाद भारत-नेपाल के रिश्तों में कड़वाहट भर गयी।

भारत में मोदी सरकार बनने के बाद नेपाली जनता के मन में विश्वास का भाव जगा था कि अब नेपाल के लोगों का भला होगा। सरकार बनने के बाद भारत के प्रधानमंत्री ने जिस तरह नेपाल का दौरा किया और वहाँ की संसद को संबोधित किया, उससे लगा कि भारत-नेपाल के संबंध पहले की तुलना में और बेहतर होनेवाले हैं। वहाँ के लोग तो यहाँ तक कहने लगे कि मोदी जी सिर्फ भारत के नहीं अपितु नेपाल के भी नेता हैं। कुछ लोग हैं, जो भारत-नेपाल के संबंध को प्रगाढ़ देखना नहीं चाहते हैं, उन्होंने जनता में गलत प्रचार किया और भारत के प्रति उकसाया भी, जिसके कारण असहज परिस्थिति का निर्माण हुआ, एक रणनीति के तहत भारत को बदनाम करने की साजिश की गई, बहुत हद तक वे अपने रणनीति में कामयाब भी हुए। मधेश-आंदोलन को जिस प्रकार से भारत को समझना चाहिए था, वैसा नहीं समझा।

के. पी. ओली के कार्यकाल में भारत-नेपाल के बीच

भारत-नेपाल के बीच जो आत्मीय संबंध है, उसे आप दुनिया के किसी भी देश के बीच नहीं पायेंगे। भारत-नेपाल के लोगों के बीच न सीमाओं का बंधन है, न सांस्कृतिक बंधन। विश्व का ध्यान नेपाल पर है। चीन, यूरोपियन यूनियन सहित कई देशों व संगठन– हर कोई नेपाल में अपना धाक जमाना चाहता है।

अविश्वास का माहौल बना रहा जिसे वर्तमान सरकार सामान्य करने की कोशिश कर रही है। यहाँ उल्लेखनीय है कि पहले भारत-नेपाल का संबंध सिर्फ राजनीतिक न होकर आम जनमानस तक आत्मीय संबंध स्थापित था, जिसमें पिछले 20 से 25 वर्ष के कालखण्ड में काफ़ी उतार-चढ़ाव देखा गया। सिर्फ़ दूतावास के भरोसे भारतीय सरकार बैठी रही, जिसके परिणामस्वरूप आम नेपाली जनता से भारत कट गया। लेकिन जिस तरह से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के अधिवेशन में नेपाल के अन्य छात्र-संगठन– माले, प्रजातंत्र पार्टी, नेपाली काँग्रेस, तराई मधेश के नेता आए हैं, वे यहाँ से जाकर भारत के प्रति जो ग़लतफहमियाँ पैदा हुई हैं, उसे दूर करने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद्, नेपाल के बारे में श्री ढकाल बताते हैं कि बहुत ही विषम परिस्थिति में प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद् की स्थापना नेपाल में हुई। स्थापना के समय नेपाल में माओवाद चरम पर था। नेपाल में परिषद् की कार्य-योजना के बारे बताते हुए उन्होंने कहा कि नेपाल में केन्द्रीय व्यवस्था कायम है, वहाँ पर राज्यों का बँटवारा नहीं हुआ। वहाँ कुल मिलाकर 75 ज़िले हैं, जिसमें से 60 ज़िलों में परिषद् का काम चल रहा है। प्रज्ञिक विद्यार्थी परिषद् नेपाल में दलगत राजनीति से ऊपर उठकर काम करनेवाला एकमात्र छात्र संगठन है, बाकी अन्य संगठन किसी-न-किसी राजनीतिक पार्टी से संबद्ध है। विद्यार्थी परिषद् ने नेपाल की मिट्टी के विचारों को वहाँ के युवाओं के बीच रखा, उसी का परिणाम है कि परिषद् ने वहाँ पर अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। वर्तमान समय में नेपाल के विभिन्न क्षेत्र परिषद् के कार्यकर्ता कार्यरत हैं। ■

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव क्र. 3

"सामाजिक भेदभाव व ग़रीबी से मुक्त भारत के लिए संकल्पित हों युवा"

वर्तमान पीढ़ी को भारतीय समाज जीवन का वास्तविक अध्ययन व प्रत्यक्ष दर्शन कराने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा आयोजित 'सामाजिक अनुभूति–2016' ने भारतीय समाज जीवन के वास्तविक चित्र को उजागर करने का प्रयास किया है तथा अपने हज़ारों कार्यकर्ताओं की संवेदना जागृत करते हुए उन्हें 'एक जीवन-एक उद्देश्य' की दिशा में उन्मुख करने में सफलता प्राप्त की है।

कर्नाटक, महाराष्ट्र, कोंकण, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान, केरल, तमिलनाडु, गुजरात, मध्य भारत, महाकोसल, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर– ऐसे प्रांतों के 11,144 कार्यकर्ताओं ने 30,825 गाँवों के 3,38,351 परिवारों के सदस्यों से सीधा संवाद करते हुए, ज़मीनी हक़ीकत को व्यावहारिक-सांख्यिकी व संवेदनशीलता की दृष्टि से वास्तविक पहलूओं को समझने का प्रयास किया है।

अभाविप का मानना है कि भारत के विकास में शहरों के योगदान के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों की भी अहम भूमिका है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 121 करोड़ में से 83.3 करोड़ गाँवों में और 37.7 करोड़ नगरीय जीवन के बावजूद आज भी ग्रामीण स्थिति अत्यंत ही चिन्ताजनक है। एक ओर जहाँ शहरों में विकास की तेज होती रफ़्तार है, वहीं गाँव के लोग मूलभूत सुविधाओं के लिए भी संघर्ष करने को मज़बूर हैं। संतोष की बात यह है कि इन सारी विपरीत विकट परिस्थितियों का सामाना करते हुए भी गाँव की श्रमनिष्ठ जनता अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु लगातार जी-तोड़ परिश्रम करते हुए अपनी परंपरा, जीवन मूल्य व नैतिक मान्यताओं में दृढ़ आस्था रखते हुए देश को खाद्यान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाए हुए है और वह गाँव व कृषि के प्रति अपना अनुराग भी संजोए हुए है। बढ़ती आर्थिक विषमता, जातीय भेदभाव और अस्पृश्यता ने गाँव के सामाजिक सौहार्द को और अधिक कलुषित कर दिया है। जिसके कारण आपसी सामाजिक सहयोग और आत्मीयतापूर्ण संबंधों का ताना-बाना भी बिखरता दिखाई दे रहा है।

राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में महिलाओं को कई किलोमीटर पैदल चलकर पानी लाने हेतु संघर्ष करना पड़ता है, वहीं दूसरी तरफ बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश के बाढ़-प्रभावित इलाकों में लोग अपनी जान-माल बचाने हेतु संघर्ष करते दिखते हैं। हरियाणा व पंजाब के कई क्षेत्रों में अन्न के समुचित भण्डारण व रखरखाव न होने के कारण वह अन्न सड़ जाता है, तो दूसरी ओर कई प्रांतों के सुदूर क्षेत्रों में पर्याप्त अन्न की व्यवस्था न होने के कारण लोगों के सामने खाद्यान-संकट उत्पन्न रहता है।

आज़ादी के 70 वर्ष बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में विकराल ग़रीबी का आलम दृष्टिगोचर होता है। किसानों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य नहीं मिलना इसका प्रमुख कारण है। गाँवों में रहनेवाले लोग अपनी हर एक ज़रूरत– चाहे वह खेती के संसाधन हों या घरों में दैनिक उपयोग का सामान आदि के लिए शहरों पर निर्भर हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर व व्यवस्थाएँ समुचित नहीं हैं। बदलते परिवेश में किसान-मजदूर व जनसामान्य में भी शिक्षा के प्रति रुझान व उत्साह बढ़ा है, पर शिक्षा की बदहाल स्थिति ने उनके उत्साह पर पानी फेर दिया है। शहरों की सीमा से दूर गाँव आज भी मूलभूत विकास से कोसों दूर हैं। गाँव में प्राथमिक चिकित्सा की भी समुचित व्यवस्था नहीं है। रोज़गार के अभाव में गाँवों से विमुख होता युवा वर्ग शहरों की चकाचौंध में आकर पलायन को मज़बूर है, किन्तु शहरों में भी उसकी स्थिति भयावह बनी हुई है। गाँवों के लिए बननेवाली अनेक सरकारी योजनाएँ भ्रष्टाचार और लूटपाट के कारण ज़मीन पर नहीं उतर पाती है। नक्सल-प्रभावित इलाकों में शिक्षा-स्वास्थ्य-सड़क-बिजली-शुद्ध पेयजल-जैसे मूलभूत विकास-कार्यों को नक्सलियों द्वारा अवरुद्ध करने से स्थिति नारकीय बनी हुई है, ऐसी विपरीत परिस्थितियों को समझकर ही विभिन्न क्षेत्रों में योजना-निर्माण व क्रियान्वयन करने की आवश्यकता व उनके प्रति संवेदनशीलता का कार्यकर्ताओं ने प्रत्यक्ष अनुभव

किया है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का यह 62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अपने कार्यकर्ताओं द्वारा लिए गए समाजिक अनुभूति के अनुभवों के आलोक में देश के छात्र-छात्रओं एवं युवा वर्ग से आह्वान करता है कि वे गाँव-गरीब-पिछड़े लोगों की समस्याओं के समाधान हेतु संघर्ष कर उसे सुपरिणाम तक पहुंचायें। अस्पृश्यता का समूल नाश व सामाजिक समरसता का विस्तार करने हेतु संगठित प्रयास आरंभ करें ताकि गरीबी व जातिगत भेदभाव के इस भँवर को समाप्त किया जा सके।

अभाविप यह महसूस करती है कि जनसामान्य तक शासन की लोक-कल्याणकारी योजनाओं की समुचित जानकारी पहुँचाए बिना उन योजनाओं का ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वयन संभव नहीं है। इसके लिए देश के छात्र युवाओं को आगे आना होगा, साथ ही गाँव एवं झुग्गी-झोपड़ी में कठिन जीवन व्यतीत करनेवाले अभावग्रस्त लोगों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने हेतु नये-नये आवश्यक प्रकल्पों, जैसे– ग्रामीण विकास फेलोशिप, अनुभूति इंटर्नशिप आदि प्रयोगों के द्वारा अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

अभाविप का 62वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन छात्र-छात्राओं व युवाओं से यह आह्वान करता है कि भारत के विकास में ग्रामीण क्षेत्रों की भागीदारी सुनिश्चित कराने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान देकर सामाजिक भेदभाव व गरीबी से मुक्त भारत निर्माण हेतु संकल्पित होकर सार्थक पहल करें। ■

"श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण-केन्द्र है अभाविप" : शिवराज

मध्य प्रदेश के पूर्व-कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रखे विचार

पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कहा कि अभाविप में कार्य करने की ऐसी पद्धति है कि उससे श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण होता है। उन्होंने बताया कि मुझे परिषद् से जुड़ने के बाद सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने की ललक पैदा हुई थी। किसी भी कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए परिषद् में एक सिद्धान्त सिखाया जाता है– पूर्व योजना, पूर्ण योजना। यह सिद्धान्त बड़े काम का है। अपने अधिकारियों को भी मैं यह सिद्धान्त बताता हूँ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि परिषद् के काम करने की रचना सुव्यवस्थित है, जिसके कारण इस फैक्ट्री (अभाविप) से निकलनेवाला प्रत्येक उत्पाद गुणवत्तायुक्त होता है। उन्होंने बताया कि परिषद् में कार्य करने से कार्यकर्ताओं में योग्यता, धैर्य, उत्साह, आत्मविश्वास, संयम और ज़िम्मेदारी के गुण विकसित होते हैं। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने पूर्व कार्यकर्ताओं को नर्मदा सेवा यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

श्री चौहान ने अभाविप में कार्य करने के अपने समय का स्मरण किया और अनेक रोचक किस्से सुनाए। उन्होंने बताया कि 1974 में वह परिषद् के संपर्क में आए थे। उसके कुछ समय बाद ही देश में आपातकाल लग गया था। उनके अधिकारी सूर्यकांत केलकर को पुलिस ने पकड़ लिया था। श्री केलकर से ज़ब्त डायरी में पुलिस को उनका नाम लिखा मिल गया। इस कारण पुलिस उन्हें भी पकड़कर ले गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि जेल मे ही उनका असली प्रशिक्षण हुआ। वहाँ उन्होंने विवेकानन्द से श्रीअरविंद तक का साहित्य पढ़ा। जेल में ही गीता का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि उन दिनों छात्र संघ के चुनावों में संगठन को अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते थे। लेकिन कार्यकर्ता चुनाव में हारने पर और उत्साहित होकर नारा लगाते थे– "अगली चोट करारी है, चारों सीट हमारी है।"

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

राष्ट्रीय पदाधिकारी : 2016-17

पदनाम	नाम	केन्द्र
अध्यक्ष	डॉ. नागेश ठाकुर	शिमला, हिमाचल प्रदेश
महामंत्री	श्री विनय बिदरे	बंगलुरू, कर्नाटक
उपाध्यक्ष	डॉ. एस सुबय्या	चेन्नई, तमिलनाडु
	डॉ. प्रशांत राऊत	भुवनेश्वर, ओडिशा
	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शाही	देहरादून, उत्तराखण्ड
	डॉ. छगनभाई पटेल	मेहसाणा, गुजरात
	डॉ. उमा श्रीवास्तव	गोरखपुर, गोरक्ष
मंत्री	श्री किशोर बर्मन	कोलकाता, पं. बंग
	श्री आलोक पाण्डेय	वाराणसी, काशी
	श्री संजय कुशराम	अनूपपुर, महाकोशल
	कु. मोनिका चौधरी	दिल्ली
	श्री रोहिन राय	इंदौर, मध्य भारत
	श्री सीमांत दास	नगांव, असम
	श्री ओ. निधिश	तिरुअनन्तपुरम्, केरल
संगठन मंत्री	श्री सुनील आम्बेकर	मुंबई, महाराष्ट्र
सह संगठन मंत्री	श्री के. एन. रघुनन्दन	भोपाल, मध्य भारत
	श्री जी. लक्ष्मण	चेन्नई, तमिलनाडु
	श्री श्रीनिवास	दिल्ली
कोषाध्यक्ष	श्री गितेश सामंत	मुंबई, महाराष्ट्र
सचिवालय सचिव	श्री चेतस सुखडिया	मुंबई, महाराष्ट्र
कार्यालय मंत्री	श्री राहुल शर्मा	मुंबई, महाराष्ट्र

सील (SEIL)-यात्रा (2016)

कुल्लु (हिमाचल प्रदेश) में सील-प्रतिनिधियों के साथ
अभाविप अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर

अजमेर (राजस्थान) में सील-प्रतिनिधियों का भव्य स्वागत

लक्ष्मी विलास पैलेस (वड़ौदरा, गुजरात) में सील-प्रतिनिधियों का समूह

राष्ट्रीय अधिवेशन, इन्दौर में मंच पर सील-प्रतिनिधियों का सम्मान

सोलापुर विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र) में सील-प्रतिनिधि

हिसार, हरियाणा में सील-प्रतिनिधियों के साथ
हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर

RNI 32464/78

मुलताई
ताप्ती महोत्सव

9 से 11 जनवरी 2017 • प्रतिदिन सायं 7 बजे से

हाईस्कूल मैदान, मुलताई

9 जनवरी 2017

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

आमंत्रित कवि

श्री योगेन्द्र शर्मा- भीलवाड़ा, श्री सर्वेश अस्थाना- लखनऊ
श्री अशोक नागर-शाजापुर, श्री मदन मोहन समर-मुलताई
डॉ. कीर्ति काले-नई दिल्ली, श्री सुदीप भोला- नई दिल्ली
सुश्री दीपिका माही-उदयपुर, सुश्री परवीन कैफ़- भोपाल

10 जनवरी 2017

पारम्परिक नृत्य

बधाई, नौरता, मटकी, काठी एवं पंथी

11 जनवरी 2017

गीत-संगीत

सुविख्यात पार्श्व गायक
श्री सुरेश वाडकर-मुम्बई

आयोजन - संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश
सहयोग- जिला प्रशासन, बैतूल एवं स्थानीय प्रशासन, मुलताई

आप सादर आमंत्रित हैं.